www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

सचित्र बाल कथाएँ

श्रम का मूल्य

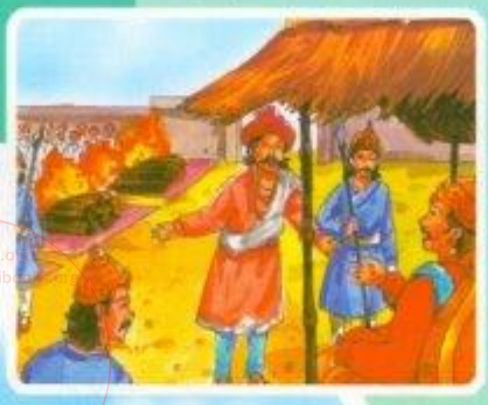

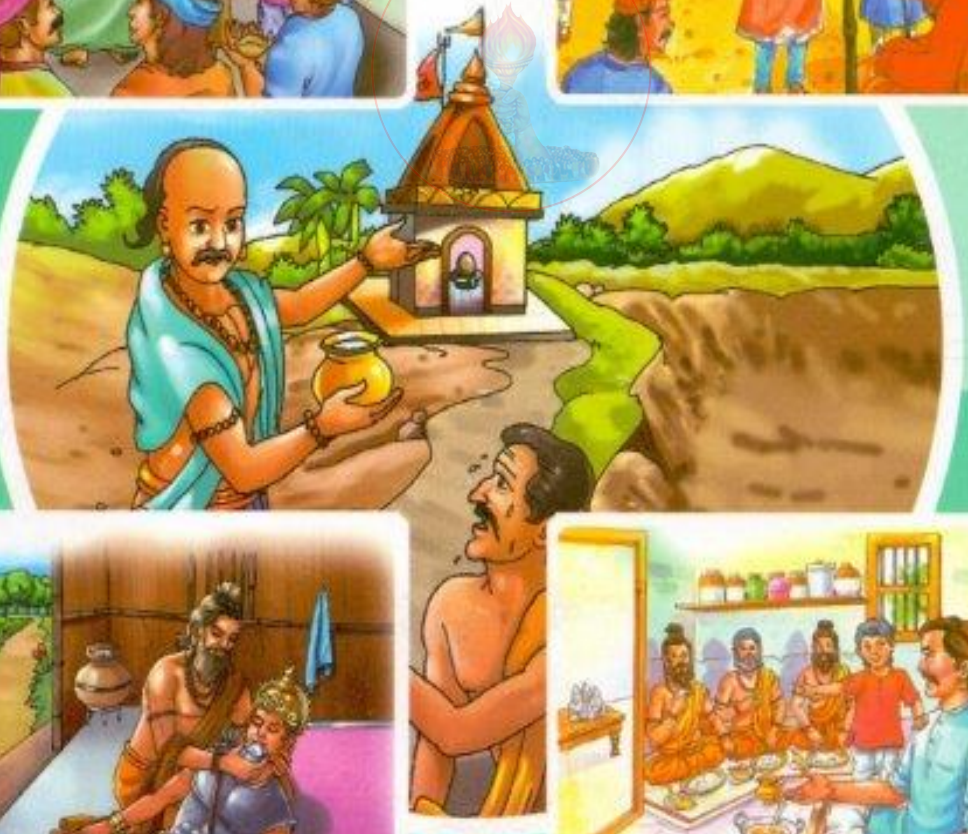

18

: BOOK MADE AVAILABLE FOR DIGITIZATION BY :

VICHARKRANTI PUSTAKALAY

SURAT, INDIA

: OUR MAIN CENTERS :

Shantikunj, Haridwar,
Uttaranchal, India – 249411
Phone no : 91-1334- 260602,
Website : www.awgp.org
E-mail : shantikunj@awgp.org

Gayatri Tapobhumi,
Mathura, U.P., India – 281003
Phone no : 91-0565-2530128,
Website : www.awgp.org
E-mail : yugnirman@awgp.org

: BOOK DIGITIZED BY :

Vicharkranti Pustakalay, Thana-Faliya, Dindoligam, Surat-394210, Gujarat, India
E-mail: vicharkranti.awgp@gmail.com | Website : www.vicharkrantibooks.org

दीपक का आश्वासन

सूरज विदा होने को था, अंधकार की कालिमा निकट थी। इतने में एक टिमटिमाता दीपक आगे आया और सूरज से बोल उठा—"भगवन्! आप सहर्ष पधारें। मैं निरंतर जलते रहने का व्रत नहीं तोड़ूँगा जैसे आपने चलने का व्रत नहीं तोड़ा है। आपके न रहने पर मैं थोड़ा ही सही, पर प्रकाश देकर अंधकार को मिटाने का मैं पूरा-पूरा प्रयास करूँगा।" छोटे से दीपक का आश्वासन सुनकर सूर्य भगवान ने उसके साहस की सराहना की व सहर्ष विदा हुए।

प्रयत्न भले ही छोटे हों पर प्रभु के कार्यों में ऐसे ही भावनाशीलों का थोड़ा-थोड़ा अंश मिलकर ऐसा कार्य कर दिखाता है कि युगों-युगों तक लोग उन्हें याद करते हैं।

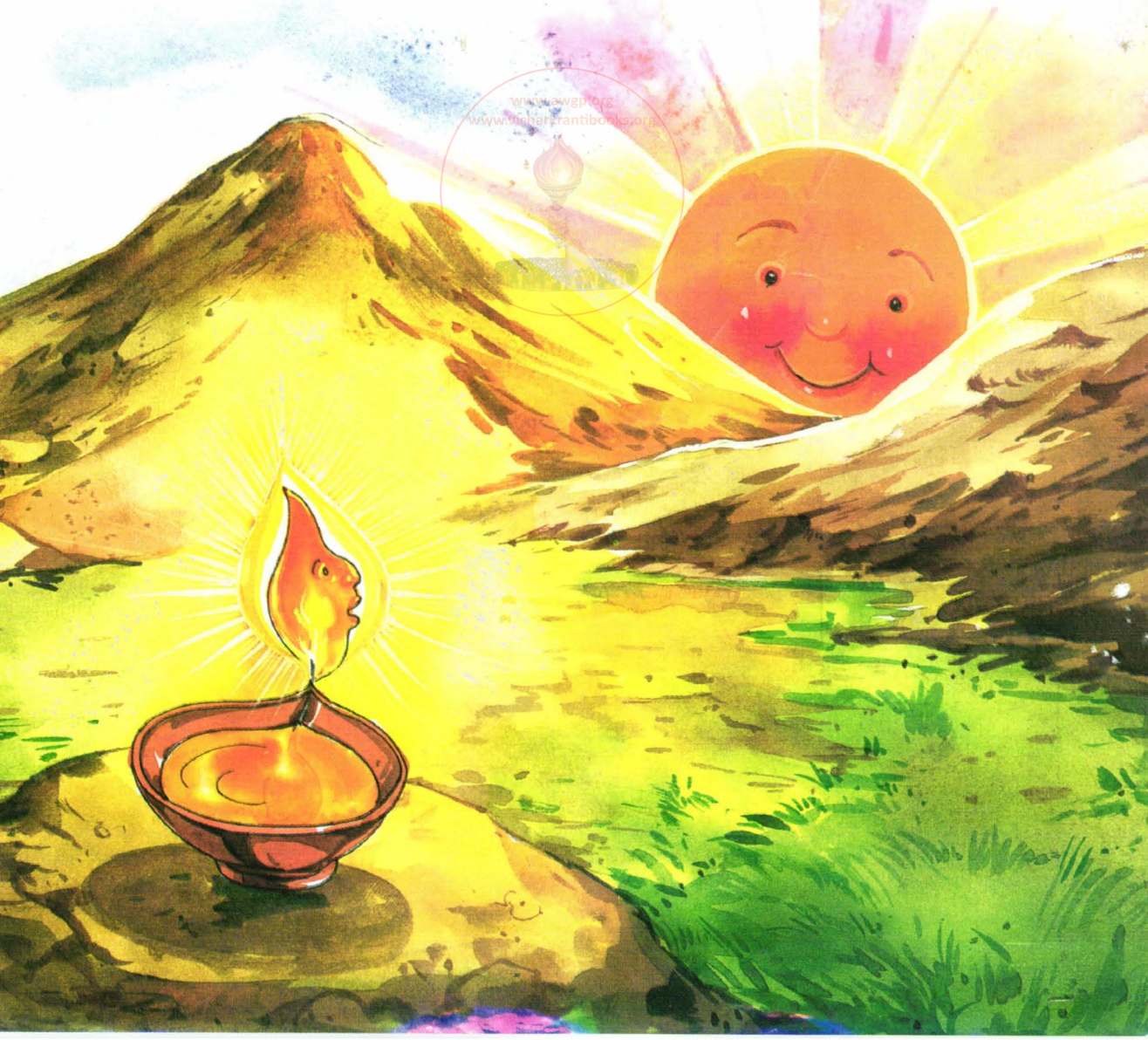

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सुयोग्य की परीक्षा

प्राचीनकाल में यह प्रथा थी कि राजा अपने बड़े पुत्र को ही युवराज बनाते थे। परंतु एक राजा ने बड़े पुत्र को युवराज बनाने की अपेक्षा शीलवान को नियुक्त करने की प्रथा आरंभ की और उसके लिए एक दिन परीक्षा रखी।

पाँच राजकुमारों के लिए भोजन परोसे गए। जैसे ही वे थाली पर हाथ डालने वाले थे कि चार शिकारी कुत्ते उन पर छोड़े गए। चार राजकुमार तो घबराकर भाग खड़े हुए, पर सबसे छोटा वहीं बैठा रहा। उसने उन चार राजकुमारों के थाल कुत्तों के सामने सरका दिए जो थाल छोड़कर डरकर भाग गए थे। कुत्ते भी खाते रहे और छोटे राजकुमार ने भी अपनी थाली के भोजन से पेट भर लिया। निरीक्षक सबकी कार्यविधि देखते रहे। छोटे ने कहा—"कुत्ते उसे काटते हैं जो अकेले खाता है। बाँटकर खाने वाले को कोई जोखिम नहीं उठानी पड़ती।" इस बुद्धिमानी पर सभी प्रसन्न हुए और उसे ही उत्तराधिकारी चुना।

शासक हो चाहे नागरिक, आदर्श व्यक्ति वही है, जो दूसरों को बाँटना जानता हो।

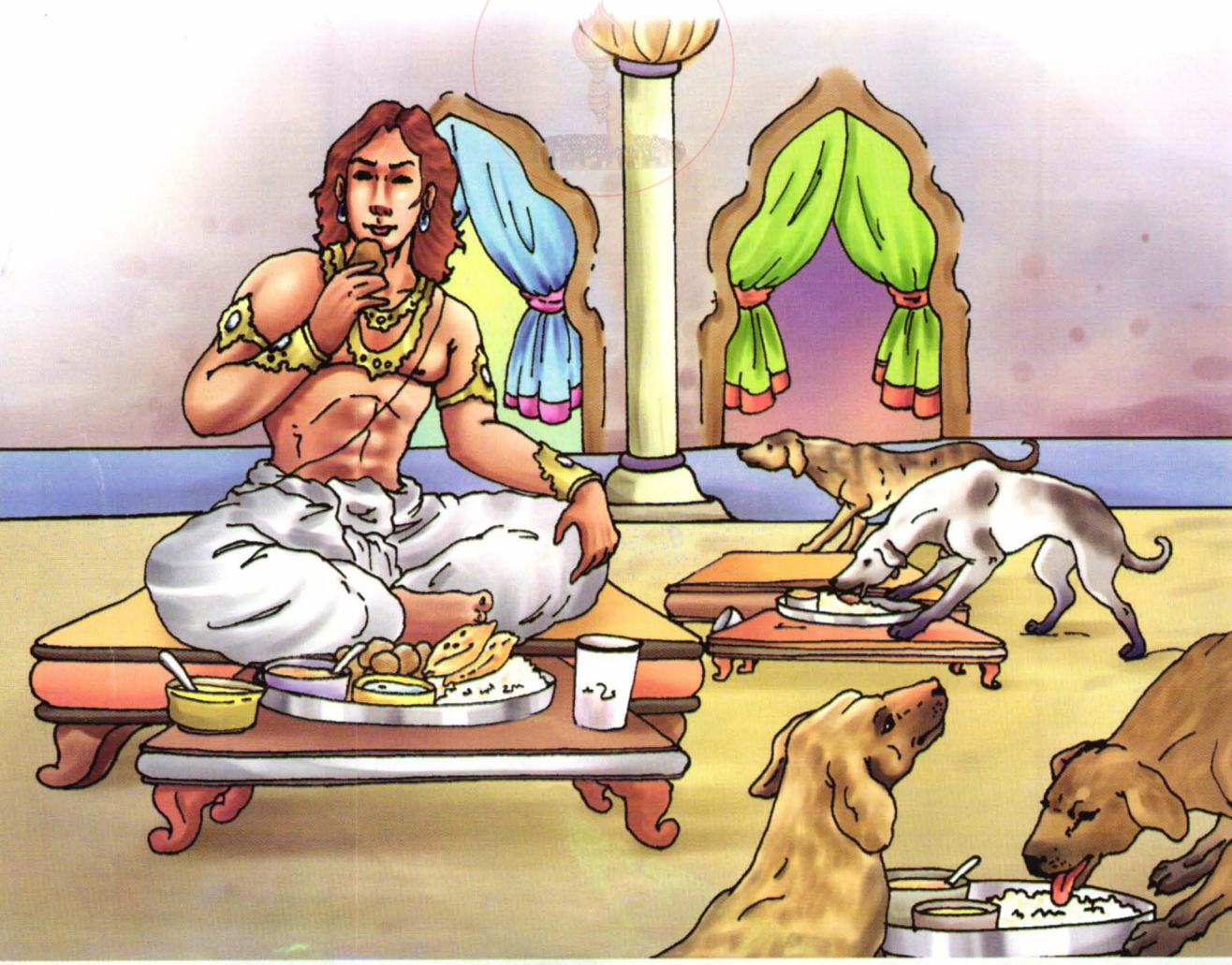

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

दया यज्ञ

एक गृहस्थ ने तीन यज्ञ किए, जिनमें उसका सब धन खरच हो गया। गरीबी से छूटने के लिए एक विद्वान से उपाय पूछने गया तो विद्वान ने बताया कि तुम अपना यज्ञों का पुण्य धर्मराज को बेच दो, वह तुम्हें बहुत सा धन दे देंगे।

वह व्यक्ति पुण्य बेचने चल दिया। रास्ते में एक जगह भोजन करने बैठा, तो एक कुत्ता वहाँ बैठा था, जो बीमार भी था और चल-फिर भी नहीं सकता था। उसकी दशा देखकर गृहस्थ को दया आई और उसने अपनी रोटी कुत्ते को खिला दी और खुद भूखा ही आगे चल दिया।

धर्मराज के यहाँ पहुँचा तो उन्होंने कहा—"तुम्हारे चार यज्ञ जमा हैं सेठ जी, किसका पुण्य बेचना चाहते हो ?" गृहस्थ ने कहा—"मैंने तो तीन ही यज्ञ किए थे, यह चौथा यज्ञ कैसा है, कब किया है मुझे तो मालूम नहीं ?" धर्मराज ने कहा—"यह दया यज्ञ है। तुमने रास्ते में बीमार कुत्ते की सेवा की, वही चौथा यज्ञ है। इसका पुण्य उन तीनों से बढ़कर है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

नेवले को मार डाला

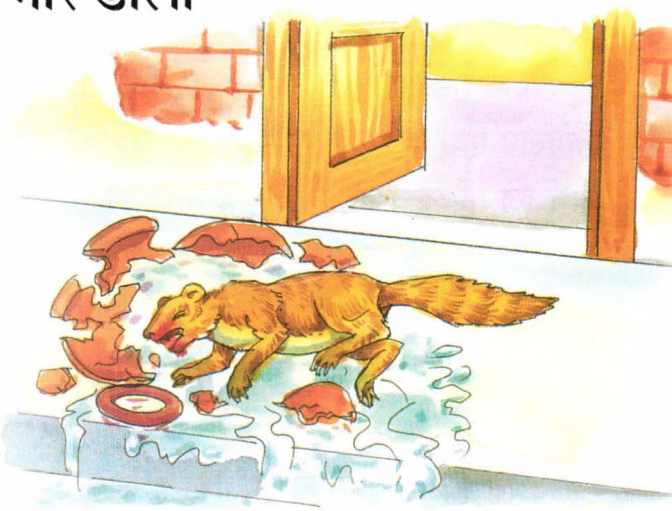

एक गाँव में देवशर्मा नाम का एक ब्राह्मण रहता था। देवशर्मा के घर पुत्र ने जन्म लिया। उसी दिन एक नेवली ने नेवले को जन्म दिया। दयावश ब्राह्मणी ने उस नेवले के बच्चे को पाल लिया। दोनों बच्चों में बड़ा प्रेम था। एक दिन ब्राह्मणी पानी भरने चली गई। बच्चा सो रहा था। नेवला भी पास ही बैठा था। दैवयोग से उधर एक सर्प निकला और बच्चे को काटने लपका। नेवले ने यह देखा तो साँप के टुकड़े-टुकड़े कर डाले। उसके मुँह में खून लग गया। वह इसी अवस्था में मालकिन को देखने कुएँ की ओर दौड़ा। द्वार पर ही ब्राह्मणी मिल गई। नेवले के मुँह में खून लगा देखकर उसने सोचा यह बच्चे को काटकर आया है। यह विचार आते ही उसने भरा हुआ घड़ा नेवले के ऊपर दे मारा, नेवला मर गया। घर जाकर ब्राह्मणी ने सारी बात समझी तो उसे बड़ा पश्चात्ताप हुआ। इसीलिए कहा गया है कि बिना विचारे कोई काम नहीं करना चाहिए ।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

चींटी को शक्कर की दावत

विंध्याचल की पर्वत शिखा पर दो चीटियाँ रहती थीं एक उत्तर में, दूसरी दक्षिण में। उत्तर वाली के पास चीनी की खान थी, दक्षिण वाली के पास नमक की। एक दिन शक्कर की खान वाली चींटी ने दूसरी चींटी को निमंत्रण दिया—"बहन! कहाँ इस नमक की खान में पड़ी हो। मेरे यहाँ शक्कर ही शक्कर है। खाकर मुँह मीठा करो और अपना जीवन सफल करो।" दूसरी चींटी ने निमंत्रण स्वीकार कर लिया। बड़े सवेरे नहा-धोकर पहली चींटी के घर जा पहुँची। चींटी ने उसे घूम-घूमकर शक्कर की खान दिखाई और कहा—"बहन! जी चाहे जितना शक्कर खाओ। यहाँ किसी बात की कमी नहीं है।" चींटी दिनभर इधर-उधर भागती फिरी और शाम को पहली चींटी से यह कहकर चली गई—"बहन! तुमने मुझे बड़ा धोखा दिया। यदि शक्कर तुम्हारे पास न थी तो मुझे निमंत्रण ही क्यों दिया?" शक्कर की खान वाली चींटी बोली—"बहन तुम्हारे मुँह में नमक का टुकड़ा दबा है इसलिए तुम्हें मिठास का पता ही नहीं चल पाया।"

इसी प्रकार जो लोग अपने पुराने संस्कार नहीं बदलते, अपनी बुराइयाँ नहीं हटाते, वे परमात्मा के समीप होते हुए भी उनकी कृपा से वंचित रह जाते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मरी बिल्ली का दस्तूर

एक बार एक विवाह के समय जब वहाँ बहुत मिष्टान्न, पकवान बन रहे थे, तब घर की पालतू बिल्ली ने ऊधम मचाया। हर चीज में मुँह डाल देती और जूठा कर देती। घर की मालकिन ने उसे पकड़ कर नाँद के नीचे बंद कर दिया। फिर वह काम में लग गई। कई रोज काम में व्यस्त रहने के कारण उसे बिल्ली को निकालने की बात याद न रही और वह उसी में दबकर मर गई।

बारात जब लौटकर आई और बहू ने घर में प्रवेश किया उस समय घर-मालकिन को बिल्ली की याद आई। उसे निकाला गया तो मरी मिली। उसे फिकवाया गया। नई बहू यह सब देख रही थी। उसने समझ लिया कि इस घर की यही परंपरा है। बाद में जब

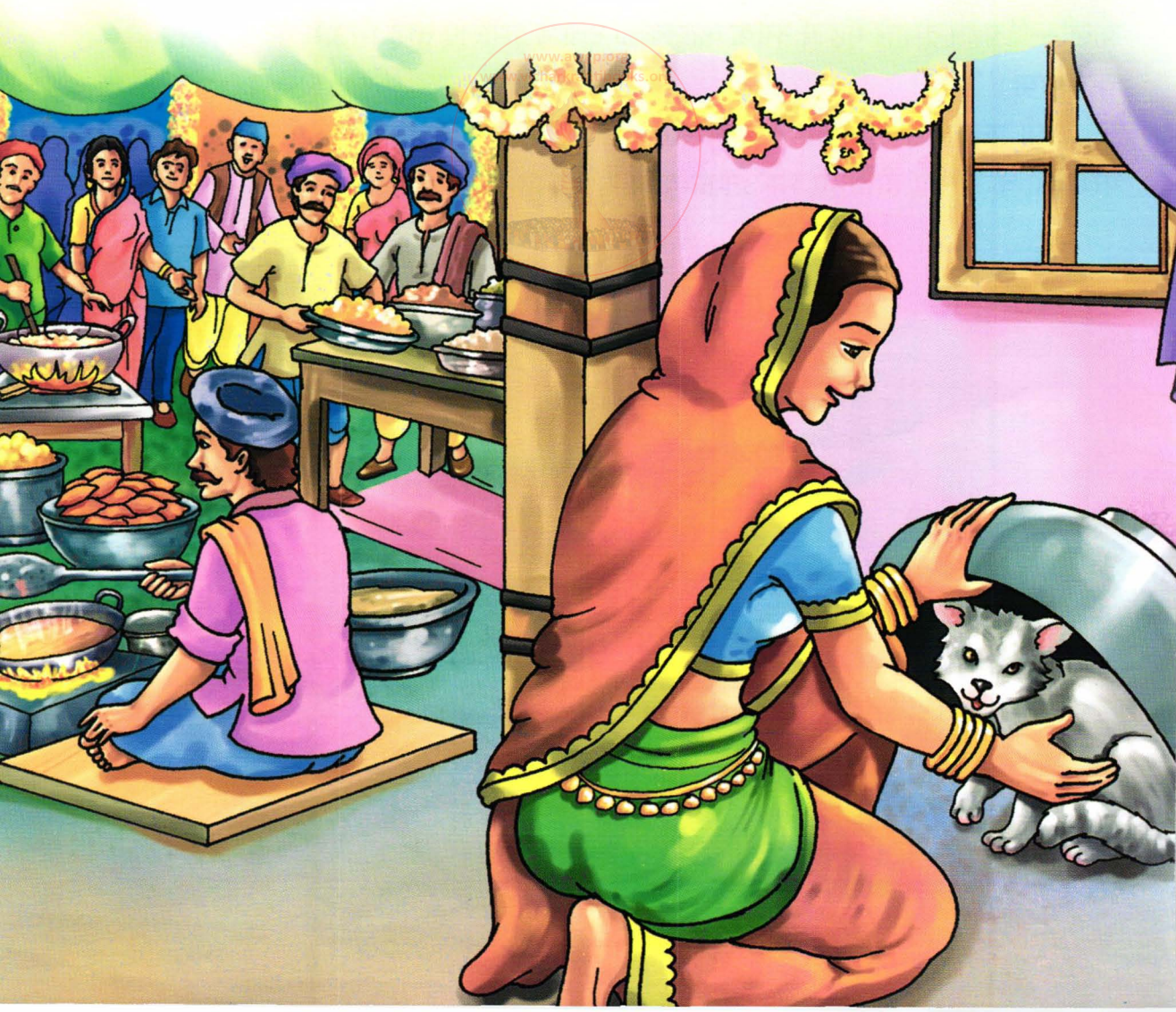

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

उसका बच्चा हुआ और उसके बड़े होने पर बारात गई तो उसने भी एक बिल्ली पकड़कर उसे नाँद के नीचे बंद किया और जब वह मर गई तो ठीक उसी समय जब नई बहू ने घर में प्रवेश किया, उस बिल्ली को फिकवाया। जो उसने देखा था उसने कुल परंपरा समझा और उसी का पालन करने में अपना धर्म या कर्त्तव्य समझा।

आजकल ऐसी ही कई अंध-परंपराएँ फैली हैं। क्या उपयोगी है क्या अनुपयोगी, इस पर विचार किए बिना क्रम चलता रहता है और परिवार के तथा समाज के लोग उसे अपनाए रहते हैं। उन्हें आज वर्तमान में अनुपयोगी समझकर छोड़ देना चाहिए।

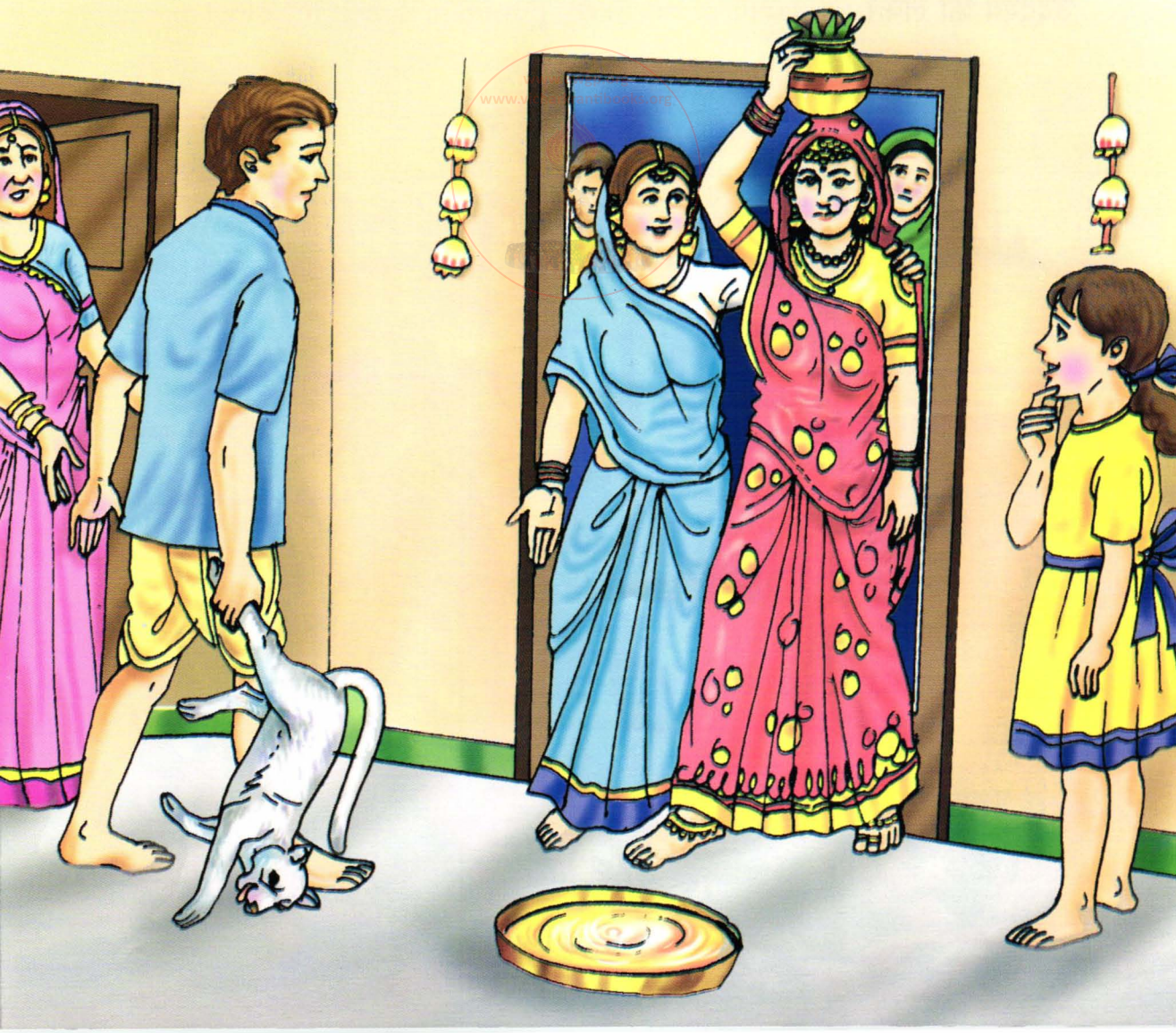

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रम का मूल्य

पवनार में विनोबा जी प्रतिदिन आठ घंटे कुआँ खोदने का काम करते थे। आस-पास की संस्थाओं के लोग भी इस कार्य में उनकी मदद करते थे। कोई नेता या मंत्री विनोबा जी से मिलने आते तो उन्हें भी यह काम करना पड़ता था। श्रीमती जानकी देवी बजाज भी कुछ दिन वहाँ रहीं और उन्होंने नियमित रूप से एक घंटा चक्की पीसने, एक घंटा रहट चलाने और छह घंटे खाली-भरी टोकरी कुएँ पर इधर-उधर देने का काम किया।

प्रसिद्ध उद्योगपति परिवार की इन सरल, निरभिमानी व सेवानिष्ठ महिला का यह उदाहरण निश्चित रूप से हमें प्रेरणा-प्रकाश देने को पर्याप्त है। जो यह सोचते हैं कि हम संपन्न हैं परिश्रम क्यों करें, वे बड़ी भूल करते हैं। परिश्रम और वह भी किसी महत्त्वपूर्ण उद्देश्य को लेकर किया जाए तो वह किसी पुण्य-कार्य से कम नहीं होता।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हजारी किसान

बिहार प्रांत के एक छोटे से गाँव में एक किसान रहता था। नाम था उसका हजारी। उसने अपने खेतों की मेड़ों पर आम के पेड़ लगाए। जब वे बड़े हुए तो उन पर पक्षियों ने घोंसले बना लिए। मधुर स्वर में चहचहाते। जब बौर आता तो कोयल कूकती। छोटे-छोटे फल आते तो सारे गाँव के लोग बारी-बारी से चटनी के लिए आम माँगकर ले जाते। वह स्वयं भी उस पेड़ के नीचे सघन छाया में चारपाई बिछाकर बैठता तो बहुत अच्छा लगता।

हजारी के बच्चे बड़े हो गए थे। उसने सोचा कि खेती-बाड़ी का काम बच्चों को सौंप देना चाहिए और स्वयं उस क्षेत्र में आम के पौधे लगवाने के लिए निकल पड़ना चाहिए। ढलती उम्र में परमार्थपरायण होने को ही वानप्रस्थ कहते हैं। उसने अपने खेत पर आमों की नर्सरी उगाई। गाँव-गाँव घूमा। आम लगाने का महत्त्व समझाया। जो लोग सहमत होते, उनके यहाँ स्वयं ही पौधे लगा आता। सिंचाई, खाद, रखवाली आदि में भी दिलचस्पी लेता। इस प्रकार मरते समय तक उसने एक हजार आम्र उद्यान लगवा दिए। उस क्षेत्र का नाम उस किसान की स्मृति में हजारीबाग पड़ा।

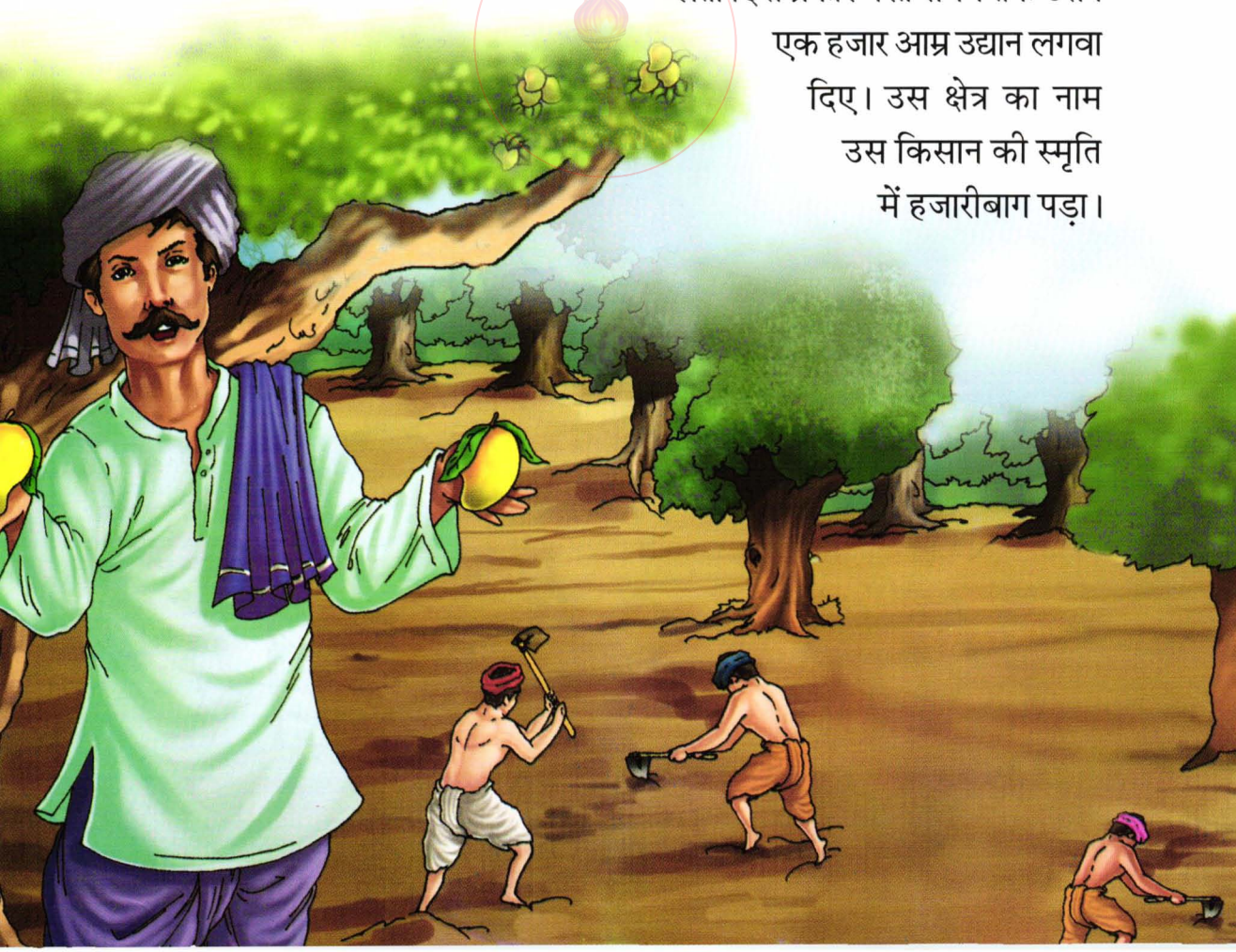

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

श्रवण कुमार

एक लड़का माता-पिता का बड़ा भक्त था। उसका नाथ था—श्रवण कुमार। उसके माता-पिता दोनों ही अंधे थे। श्रवण कुमार के मन में अपने माता-पिता के लिए बहुत श्रद्धा थी। वह उन्हें देवता की भाँति मानता था।

एक बार श्रवण कुमार के माता-पिता ने अपने बेटे से कहा कि हमें सब तीर्थों की यात्रा करने की बड़ी इच्छा है, पर हम अकेले कहीं भी नहीं जा सकते। तुम हमें किसी भी प्रकार तीर्थयात्रा करा दो। श्रवण कुमार ने एकदम कहा कि मैं अवश्य आपकी इच्छा पूरी करूँगा। उनको तीर्थयात्रा पर ले जाने के लिए श्रवण कुमार ने काँवर बनाई और दोनों पलड़ों में अंधे माता-पिता को बिठाया तथा सारे तीर्थों की यात्रा कराई। माता-पिता की इस प्रकार सेवा करके श्रवण कुमार का नाम संसार में अमर हो गया।

माता-पिता जीवन भर हमारे लिए कष्ट सहते हैं, हमें पालते हैं, तो उनकी सेवा करना भी हमारा बहुत बड़ा कर्त्तव्य है।

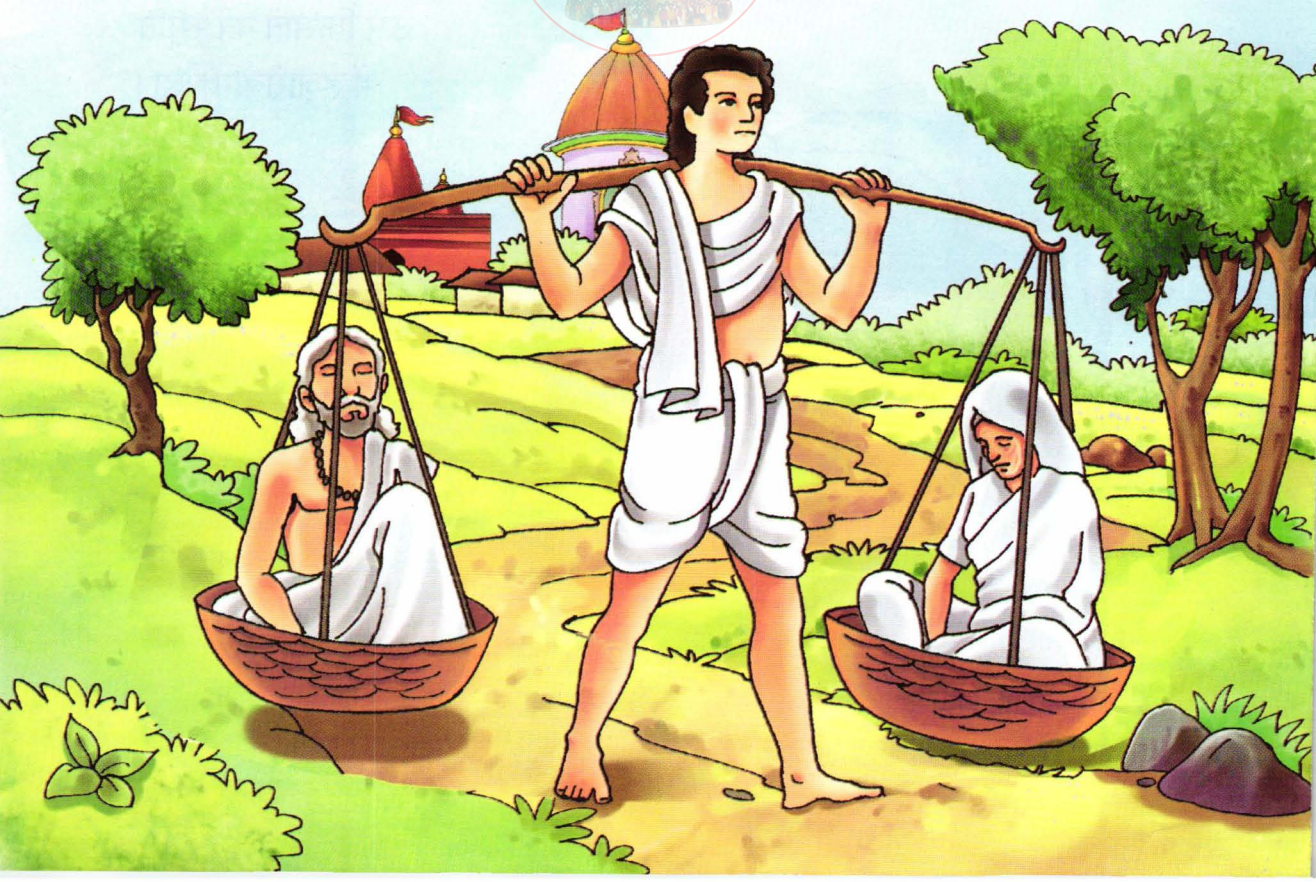

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

पाप और प्रायश्चित

राजा भोज ने सपना देखा कि गंदी कीचड़ में सना हुआ एक सुअर स्नान करने के लिए किसी निर्मल नदी में प्रवेश कर रहा है। स्नान करके लौटा तो उसका रूप बदल गया है और देवपुरुष जैसा सुंदर बनकर वह वापस लौटा है। जागने पर राजा ने उस पर विचार किया पर कुछ समझ में न आया।

प्रात:काल राजसभा में राजा ने उस आश्चर्यजनक सपने का रहस्य पूछा तो एक विद्वान ने बताया—"जब व्यक्ति पाप करता है तो समझो वह कीचड़ में गिर रहा है और एक पशु के समान है। और जब वह पश्चात्ताप करके उस पाप को धो लेता है तो वह फिर से देवताओं जैसा पुरुष बन जाता है। पाप का प्रायश्चित करके व्यक्ति पाप से मुक्त हो सकता है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

अपना काम स्वयं करो

बंगाल के एक छोटे से स्टेशन पर रेल रुकी। एक युवक ने जरा जोर से आवाज लगाई—"कुली! कुली!!" भला उस छोटे स्टेशन पर कुली कहाँ से आता। तभी एक अधेड़ आदमी ने देखा कि युवक के पास एक छोटी सी पेटी है, सो वह उसके पास चला गया। तब युवक ने उसे ही कुली समझकर झिड़कते हुए कहा—"तुम लोग बड़े सुस्त हो जी, मैं कब से पुकार रहा हूँ। ले चलो इस बकसे को उठाकर।" उस आदमी ने बिना कुछ कहे-सुने पेटी उठा ली और युवक के पीछे-पीछे चल दिया। घर पहुँचने पर

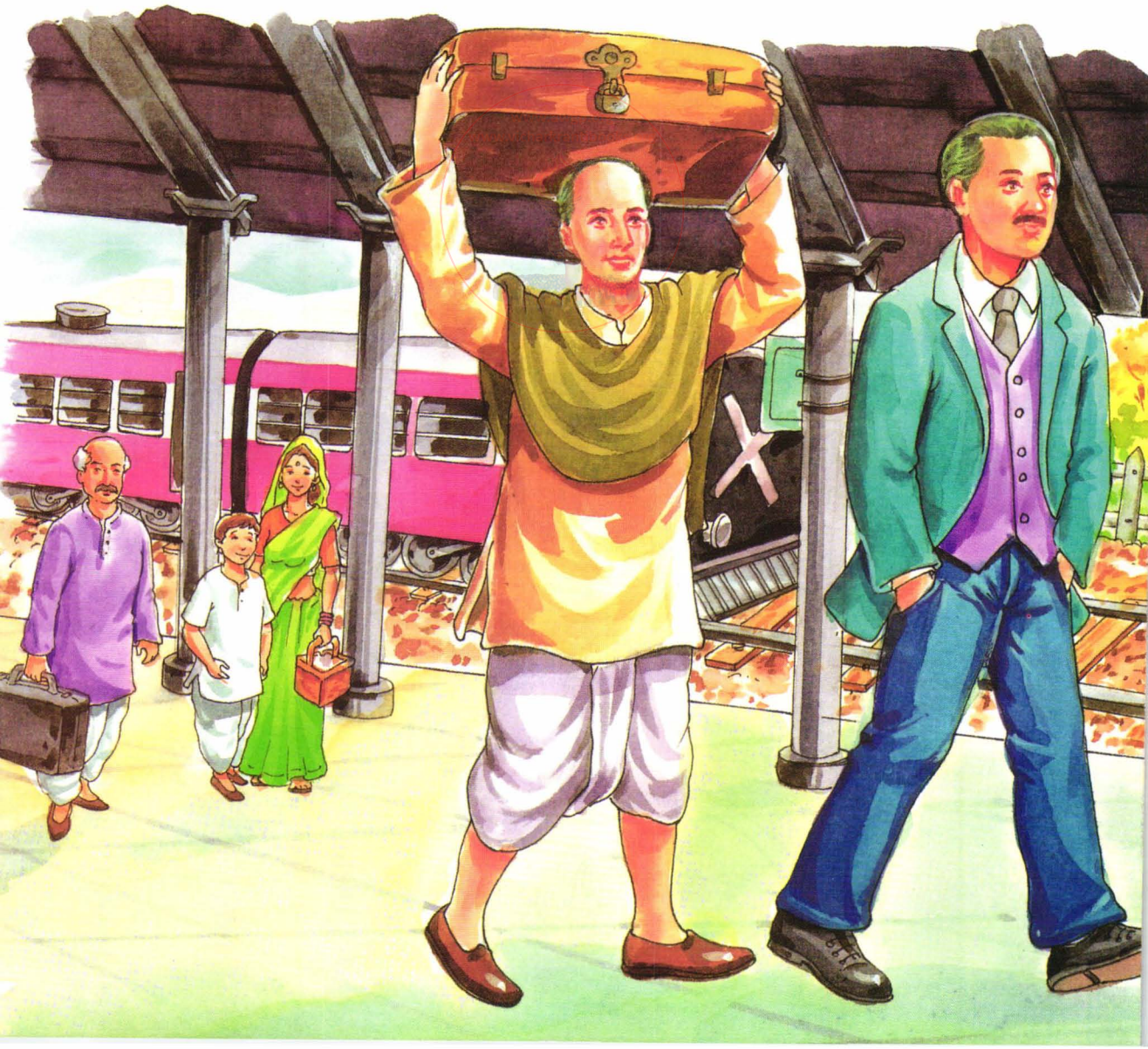

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

युवक ने मजदूरी के पैसे जो निकाले, तो वह आदमी बोला—"धन्यवाद मुझे इसकी जरा भी जरूरत नहीं है।" तभी घर के अंदर से युवक का बड़ा भाई आया और बोला—"नमस्कार विद्यासागर जी!" सुनते ही युवक के पैरों तले की जमीन खिसक गई। वह विद्यासागर जी के चरणों पर लोट गया। उसे उठाकर गले लगाते हुए वे बोले—"भाई! मेरे देशवासी व्यर्थ का अभिमान त्यागकर अपने हाथों से अपना काम स्वयं करने लग जाएँ, यही मेरी इच्छा है। तुम आगे से स्वावलंबी बनो यही मेरा मेहनताना है।"

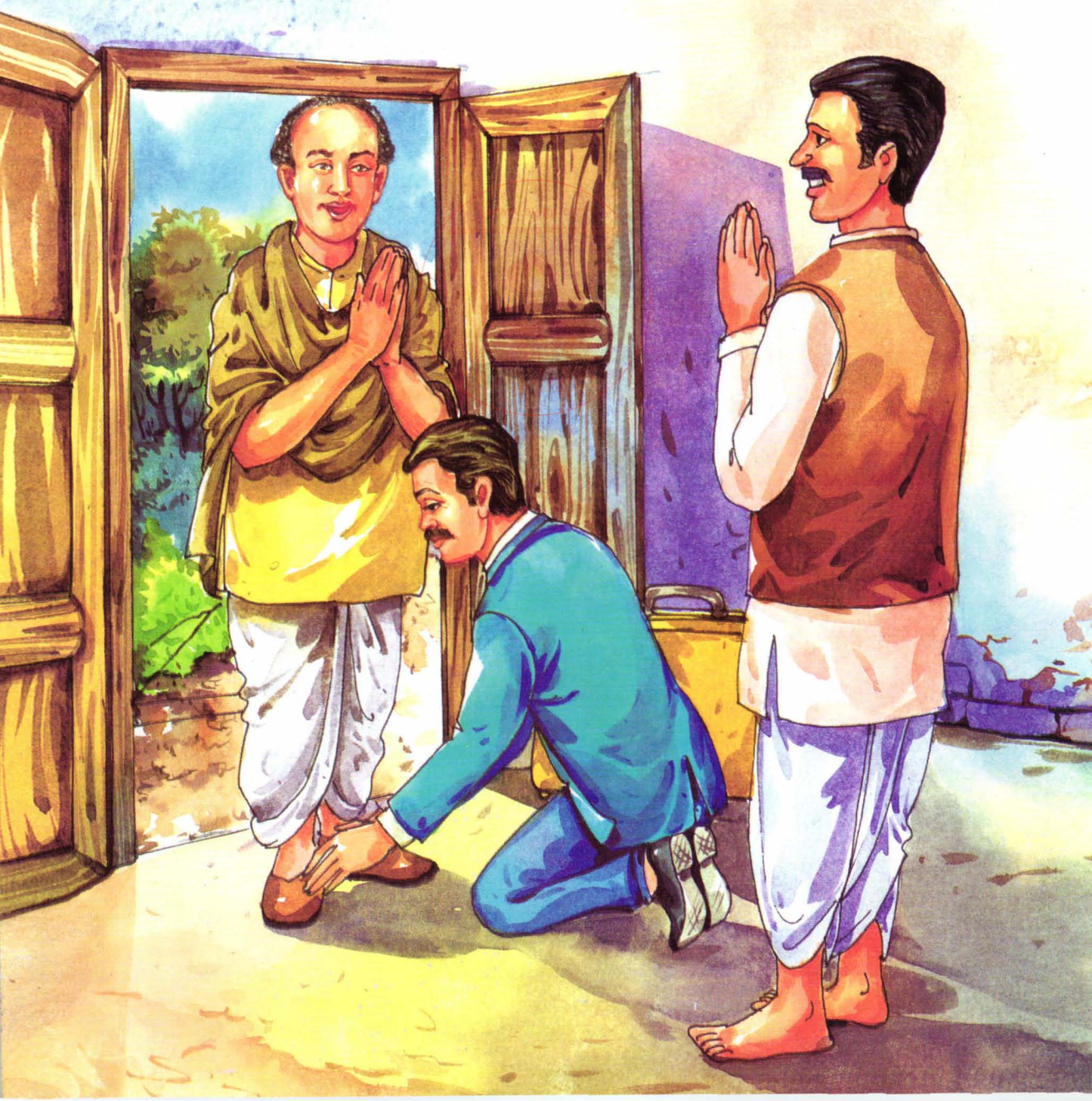

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बिना जोते खेत में बीज

किसान ने अपने बच्चों को बताया—"बेटे! अगली फसल हम जब बरसात होगी तब बो देंगे।" बेटे ने बात याद रखी कि बरसात होगी तो बीज खेत में बोना है। कुछ दिनों में वर्षाऋतु आई। मूसलाधार वर्षा हुई। उसका बेटा अगले दिन तड़के ही उठकर अपने खेतों में गया और बीज बिखेर आया। किसान को मालूम हुआ तो माथा पीटकर रह गया, बोला—"बेटे! वर्षा होने के बाद पहले खेत को साफ करना होता है, उसे जोतना भी आवश्यक होता है। तभी बीज उगकर पौधे बनते और अच्छे फल देते हैं।"

प्रत्येक कार्य का एक तरीका होता है, उसको जानना बहुत जरूरी होता है। थोड़ी सी जानकारी से जो किया जाता है,वह भी बेकार चला जाता है।

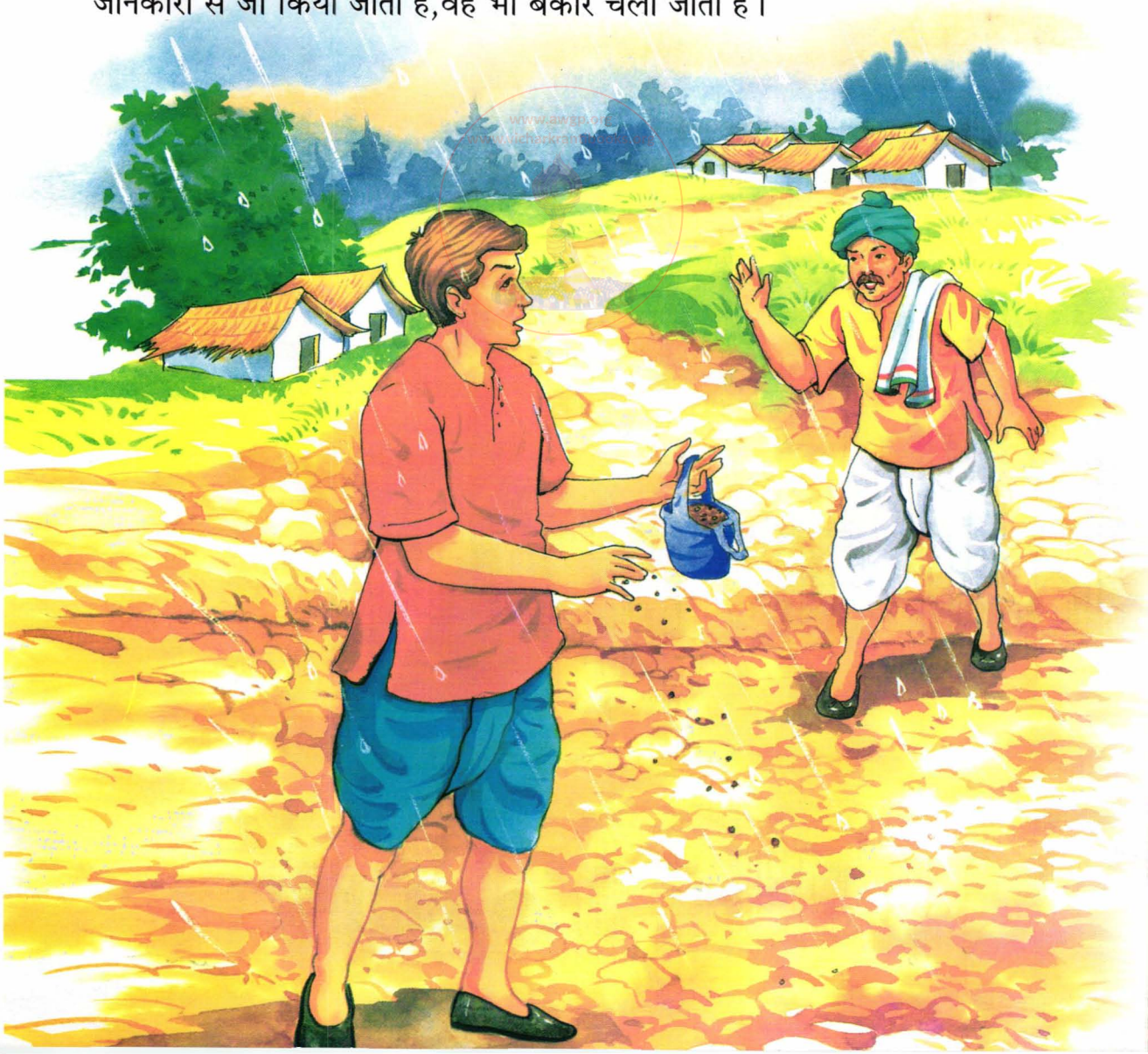

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

मूर्तिकार रोया क्यों ?

एक मूर्ति बनाने वाले ने बहुत सुंदर मूर्ति बनाई। बहुत देर तक उलट-पुलटकर देखता रहा फिर उसे देखकर फूट-फूटकर रोने लगा।

लोगों ने मूर्ति बनाने वाले से रोने का कारण पूछा तो उसने कहा कि मुझे बहुत खोजने पर भी इसमें कोई गलती दिखाई नहीं पड़ी। यदि मेरी नजर बारीक गलती को नहीं पकड़ पाई तो भविष्य में इससे अच्छी मूर्तियाँ बनाने का द्वार ही बंद हो जाएगा। कभी भी मैं अच्छी मूर्तियाँ नहीं बना सकूँगा।

यही भावना व्यक्ति को प्रखर बनाती है कि कार्य में कहीं कोई गलती तो नहीं रही, बार-बार देखना चाहिए। केवल कार्य करके ही संतुष्ट नहीं हो जाना चाहिए और न ही भगवान के सहारे छोड़ देना चाहिए।

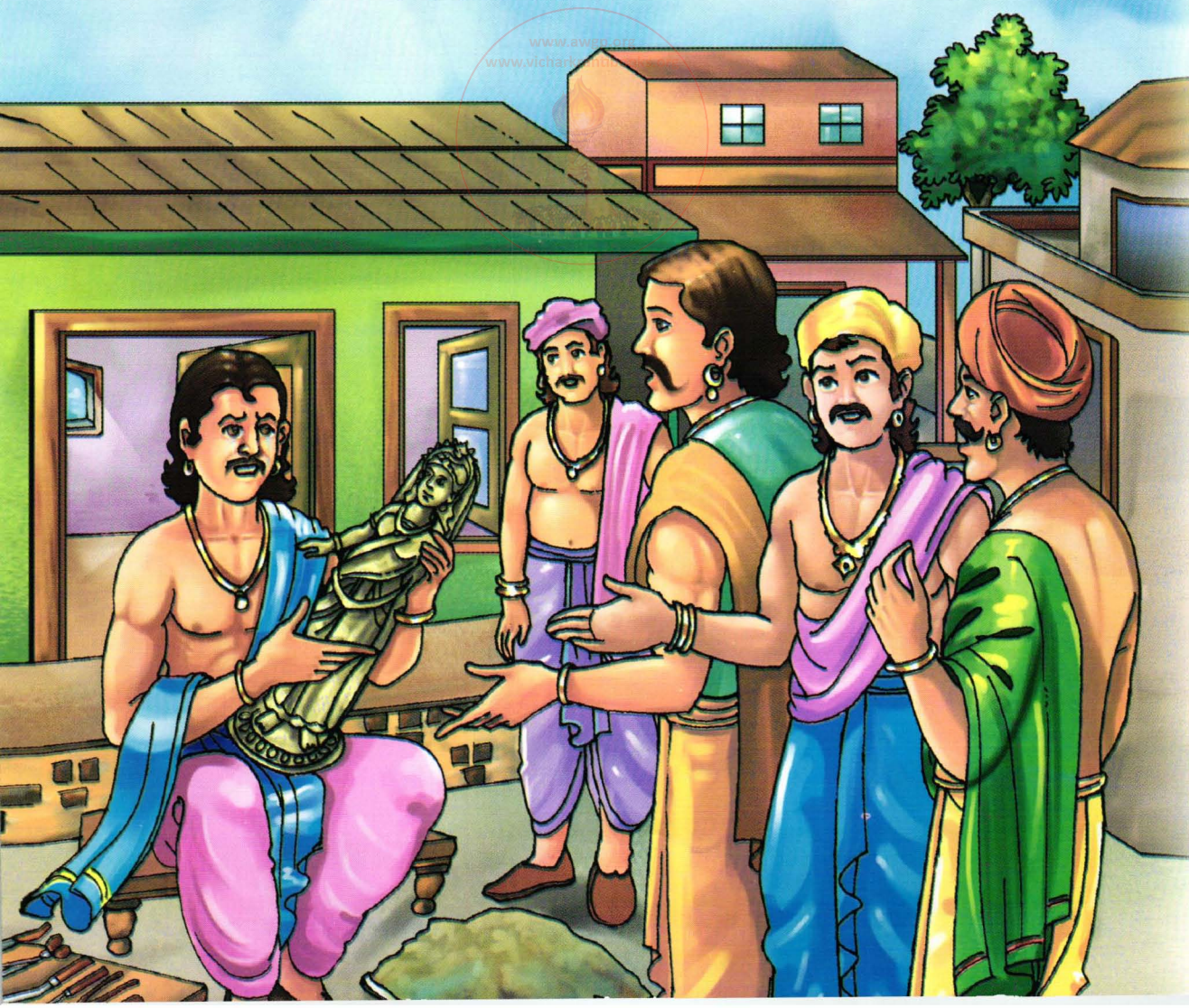

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

दुष्टों से बचना जरूरी

एक हंस और कौवा दोनों साथ-साथ रहते थे। हंस अपने स्वभाव के अनुसार सदैव कौवे के प्रति सद्भावना और शुभकामनाएँ रखता, किंतु कौवा मन ही मन हंस के प्रति कपट रखता था। वह किसी न किसी तरह हंस का बुरा करने की ताक में रहता। एक दिन हारा-थका एक शिकारी उस पेड़ के नीचे आकर सो गया, जहाँ वे दोनों रहते थे। कुछ देर में उस शिकारी के मुँह पर धूप आ गई।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

इस पर हंस को बड़ी दया आई और उस हंस ने अपने पंख पसारकर उस धूप को रोक लिया। कौवे को तो मौका मिल गया नीचा दिखाने का। नीचे की टहनी पर बैठकर कौवे ने सोते शिकारी के मुँह पर बीट कर दी और स्वयं उड़ गया। शिकारी की नींद खुली तो ऊपर हंस को पंख पसारे हुए देखा। उसे क्रोध आया और तीर चलाकर उस हंस को मार दिया।

आज समाज में ऐसी ही दुर्बुद्धि के शिकार व्यक्ति बहुत से मिल जाएँगे। उनसे मित्रता करने से तो उचित है, स्वयं को उनसे दूर रखा जाए।

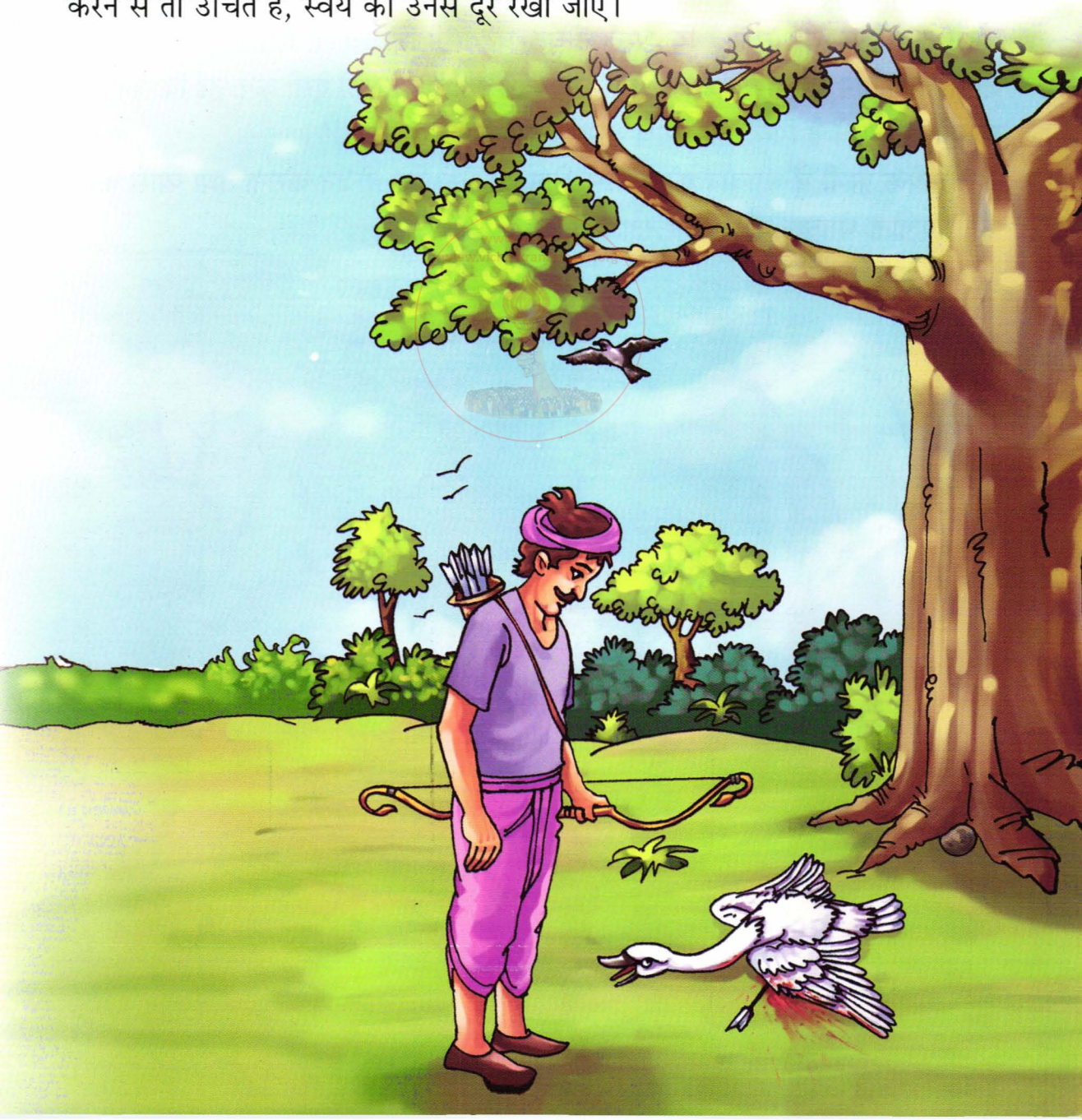

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

एकनाथ ने गधे को जल पिलाया

एक बार संत एकनाथजी अन्य संतों के साथ प्रयाग से गंगाजी का जल काँवर में लेकर रामेश्वर जा रहे थे। रास्ते में एक रेतीला मैदान आया। वहाँ एक गधा प्यास के मारे छटपटा रहा था। एकनाथजी ने तुरंत काँवर से गंगाजल लेकर गधे के मुख में डाला। एकनाथ के साथी संत प्रयाग के लाए उस गंगाजल का इस प्रकार प्रयोग होते देखकर क्रुद्ध हुए और बोले यह क्या कर रहे हो ? एकनाथ ने उन्हें समझाया—"अरे सज्जन वृंद ! आप लोगों ने तो बार-बार सुना है कि भगवान घट-घटवासी हैं। तब भी ऐसे भोले बनते हो ! जो वस्तु या ज्ञान समय पर काम न आवे, वह व्यर्थ है। भगवान की ऐसी कृपा हुई कि काँवर का जो जल गधे ने पिया, वह सीधे श्रीरामेश्वरम् पर चढ़ गया।"

प्रत्येक प्राणी में भगवान का निवास होता है। भूखे को भोजन कराना तथा प्यासे को पानी पिलाना भगवान को ही मिलता है।

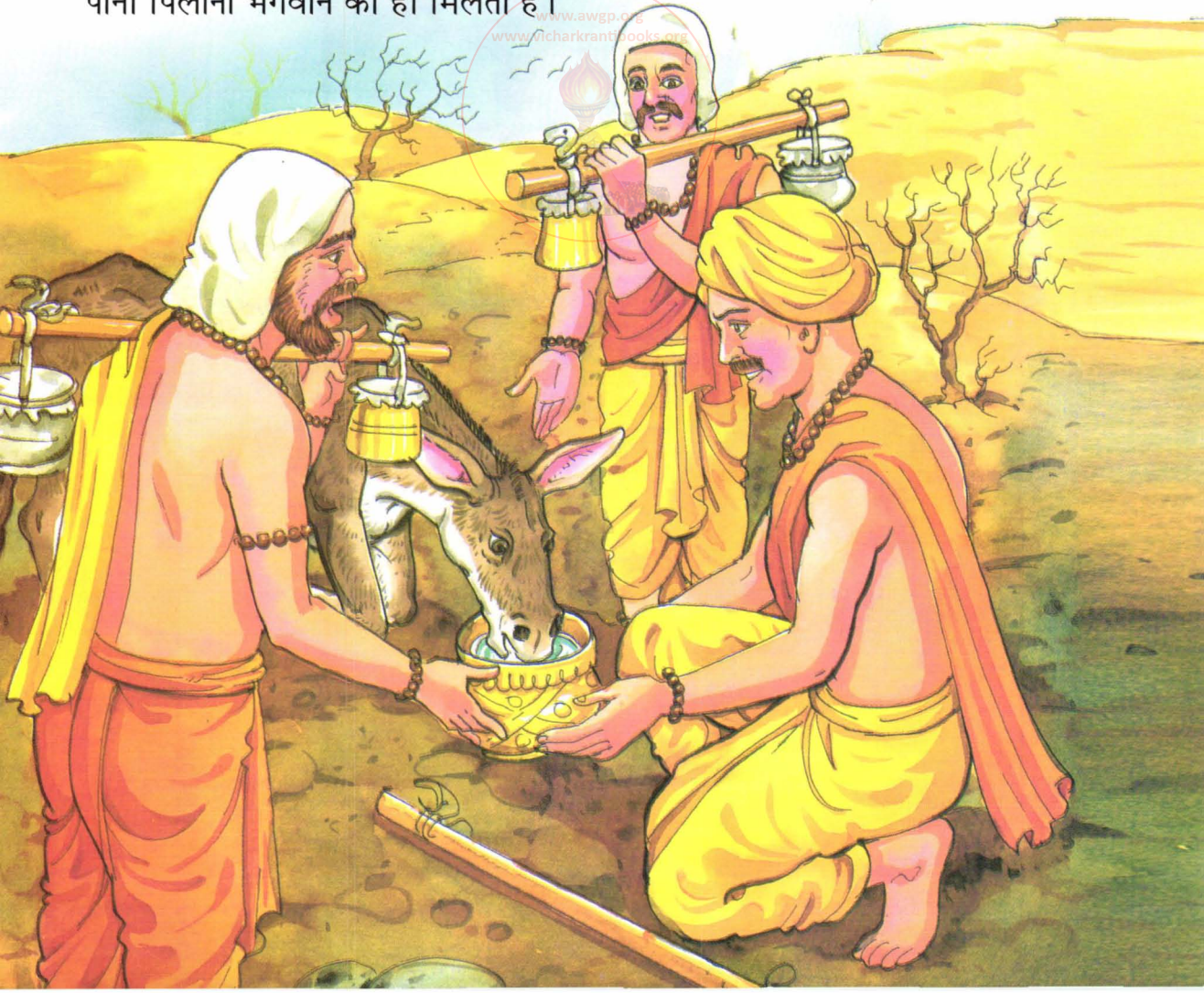

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

सहायता भी पूजा है

राजा विक्रमादित्य एक बार जंगल में आखेट के लिए निकले। जंगल में भटक गए। साथी भी कहीं मार्ग में छूट गए। निविड़ वन में प्यास के कारण राजा का दम घुटने लगा। कहीं पानी दिखाई नहीं दे रहा था। सामने एक पर्ण कुटी पर दृष्टि पड़ी, किसी तरह कुटी तक राजा पहुँचे। भीतर देखा तो एक साधु समाधिमग्न थे। इतने में राजा प्यास के कारण मूर्च्छित होकर गिर पड़े।

मूर्च्छा दूर हुई तो महाराज विक्रमादित्य ने देखा वही संत उसका मुँह धो रहे हैं तथा पंखा झल रहे हैं। होश में आते ही संत ने राजा को पानी पिलाया। राजा ने विस्मयवश पूछा—"आपने मेरे लिए समाधि क्यों भंग की, अपनी उपासना क्यों बंद कर दी?" संत मधुर वाणी में बोले—"वत्स! भगवान की इच्छा है कि उनके संसार में कोई दुखी न रहे। उनकी इच्छा की पूर्ति आवश्यक है। दूसरों की सेवा से ही उपासना सफल होती है।"

दुखी की सेवा करना ही तो भगवान की पूजा-उपासना है।

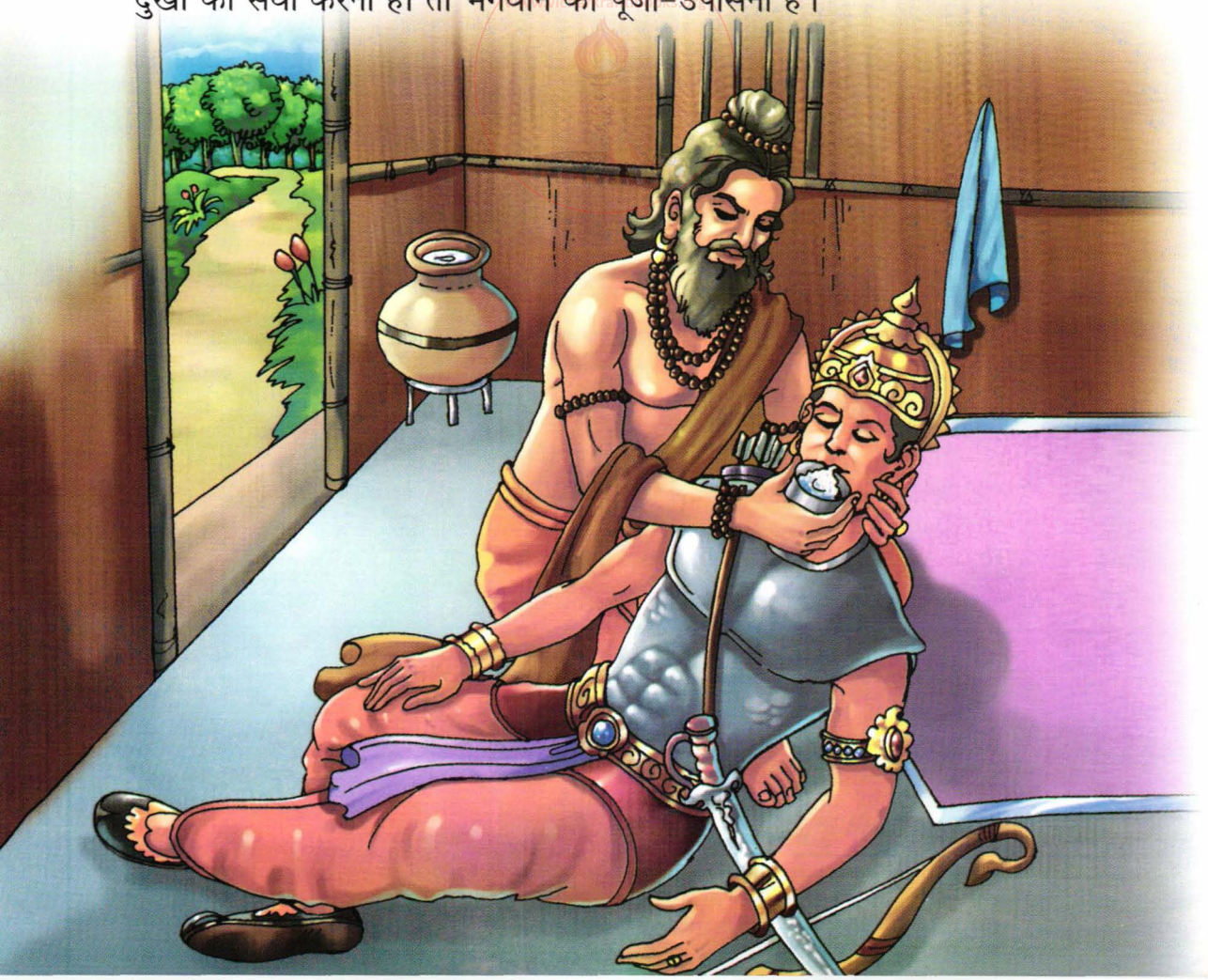

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

खाँड के साधू

एक गृहस्थ तीन खाँड के खिलौने लाया जो कि तीन साधुओं की मूर्तियाँ थीं। संयोगवश उसी दिन उसके यहाँ तीन साधु भोजन करने आए। गृहस्थ ने उन्हें बड़ी श्रद्धा से बिठाया। इतने ही में गृहस्थ का एक छोटा लड़का आया। वह उन खिलौनों को लेकर पूछने लगा—"यह क्या है पिताजी ?" गृहस्थ बोला—"ये साधु हैं।" बालक ने पूछा—"इनका क्या होगा ?" गृहस्थ ने कहा—"इन्हें खाएँगे।" लड़का बोला—"कब ?" गृहस्थ बोला—"पहले इन साधुओं को भोजन कराकर हम खाना खा लें, फिर एक-एक कर तीनों को खा लेंगे।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

गृहस्थ तो इस प्रकार अपने बालक को उन खाँड़ के खिलौनों के बारे में बतला रहा था, उधर साधुओं ने समझा कि यह बातचीत उनके बारे में चल रही है। यह समझकर साधु उसके यहाँ से भागे। गृहस्थ को बड़ा आश्चर्य हुआ, वह उनके पीछे भागा। वे लोग एक जगह रुके, थक गए थे, तो गृहस्थ ने उनके भागने का कारण पूछा। साधुओं ने कहा— "तुम हमें मार डालना चाहते थे, हम तुम्हारी सब बात सुन रहे थे।" गृहस्थ ने कहा— "महाराज! मैं तो बालक से खाँड़ के खिलौनों के बारे में बातचीत कर रहा था।" तब साधुओं की समझ में आया और वे फिर वापस उसके घर गए और भोजन किया। मन की दुर्बलता से लोग ऐसे ही डरते हैं, जबकि वास्तविकता कुछ और ही होती है।

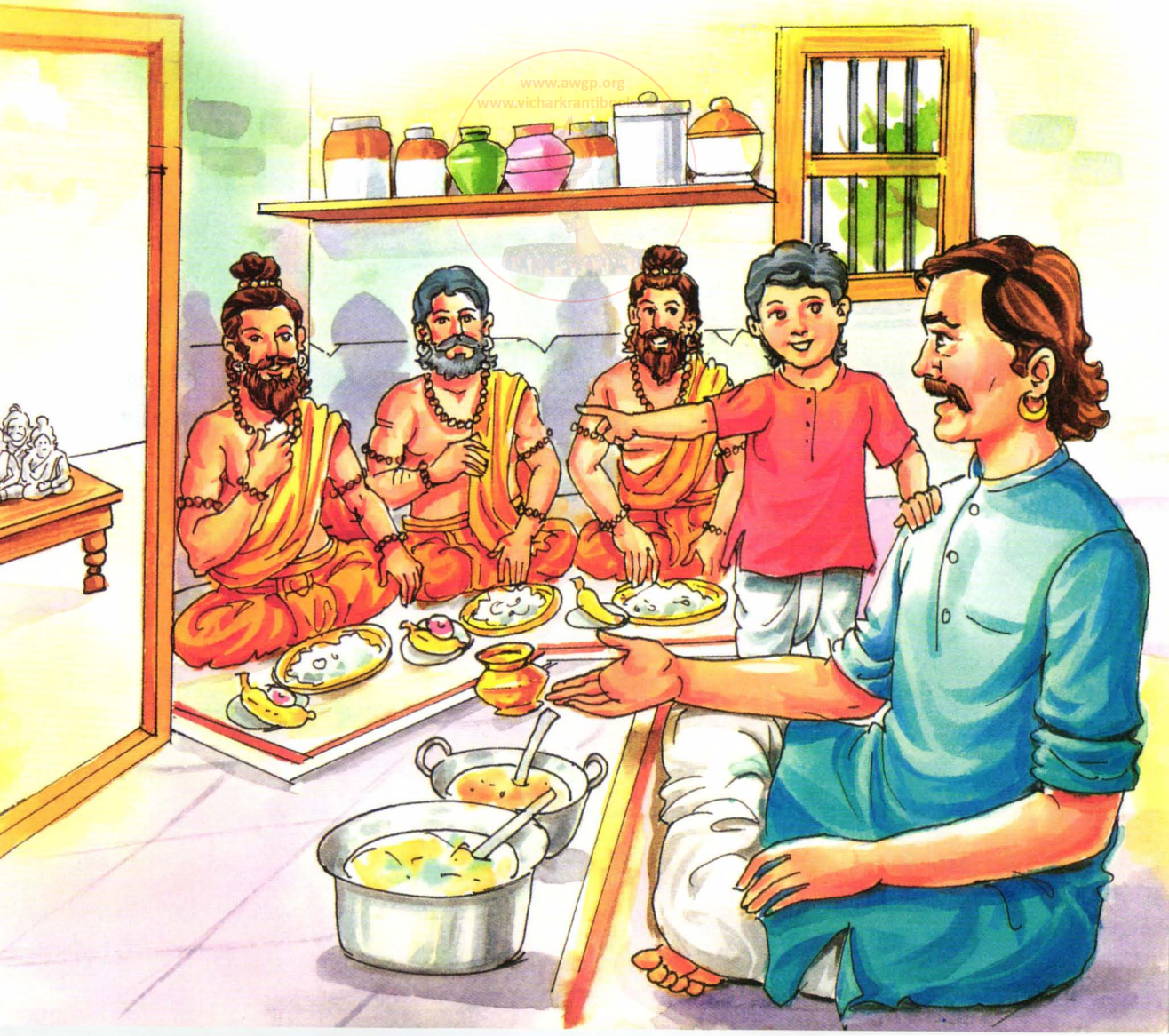

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

संयुक्त रहने का लाभ

एक पिता ने झगड़ा करते हुए अपने बेटों को एक कहानी सुनाई। एक व्यक्ति के पास रेशम का थान था। उसके धागे आपस में लड़ने लगे। अलग-अलग रहने की सबने ठानी। दर्जी ने उस थान को काटकर टुकड़े कर दिए। एक जगह खजूर की पत्तियाँ थीं। सूखी और बिखरी पड़ी थी। उन्होंने मिल-जुलकर रहने का निश्चय किया। माली ने इकट्ठी करके उनकी चटाई बुन दी। रेशम की धज्जियाँ दुकान-दुकान पर मारी-मारी फिरीं, किसी ने नजर उठाकर भी उन्हें नहीं देखा, जबकि चटाई का गट्ठा हाथोंहाथ बिक गया।

अलग होने और शामिल रहने का अंतर दोनों ने समझा और भविष्य के लिए सही रास्ता अपनाया। रेशम के धागे मिल-जुलकर रहते तो वे महँगी कीमत पर बिकते । उनके सुंदर-सुंदर वस्त्र बनते। उन्हें भगवान भी धारण करते और धनिक भी खरीदते। वे सभी की प्रशंसा का पात्र बनते। बेटों की समझ में आया कि मिल-जुलकर रहने पर सभी प्रशंसा करते हैं और अपना लाभ भी होता है।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

स्वयं अनुभव करो

एक राजा के दो पुत्र थे। जब वे बड़े हुए तो राजा ने उन्हें शिक्षा प्राप्त करने के लिए गुरु के आश्रम में भेज दिया। कुछ वर्षों बाद जब राजकुमारों की शिक्षा पूरी हो गई तो राजा उन्हें लेने आए।

चलते समय आचार्य ने कहा—"एक बात सिखाने को रह गई सो और सीखते जाओ।" उन्होंने एक छड़ी मँगाई और दोनों राजकुमारों के हाथ पर दो-दो छड़ी कसकर जमा दी। राजकुमारों ने पूछा—"यह क्या शिक्षा हुई?"

आचार्य जी ने कहा—"तुम्हें बड़े होकर राज्य-शासन चलाना है। किसी निर्दोष को दंड मिलने पर उसे कितना बुरा लगता है, यह सिद्धांत भी सीखकर जाओ। इसे सदा गाँठ बाँधकर रखना।" राजा अभी तक चुपचाप खड़ा यह सब देख रहा था। वह गुरु के इस व्यवहार से पहले तो बहुत दुखी था। परंतु अब वह पुत्रों सहित गुरु के चरणों पर गिर पड़ा और बोला—"आज आपने जीवन की बहुत बड़ी शिक्षा दी है। राजा का प्रजा के लिए यही सबसे जरूरी कर्त्तव्य है। आपने बड़ी अच्छी तरह से यह सिखाया है।"

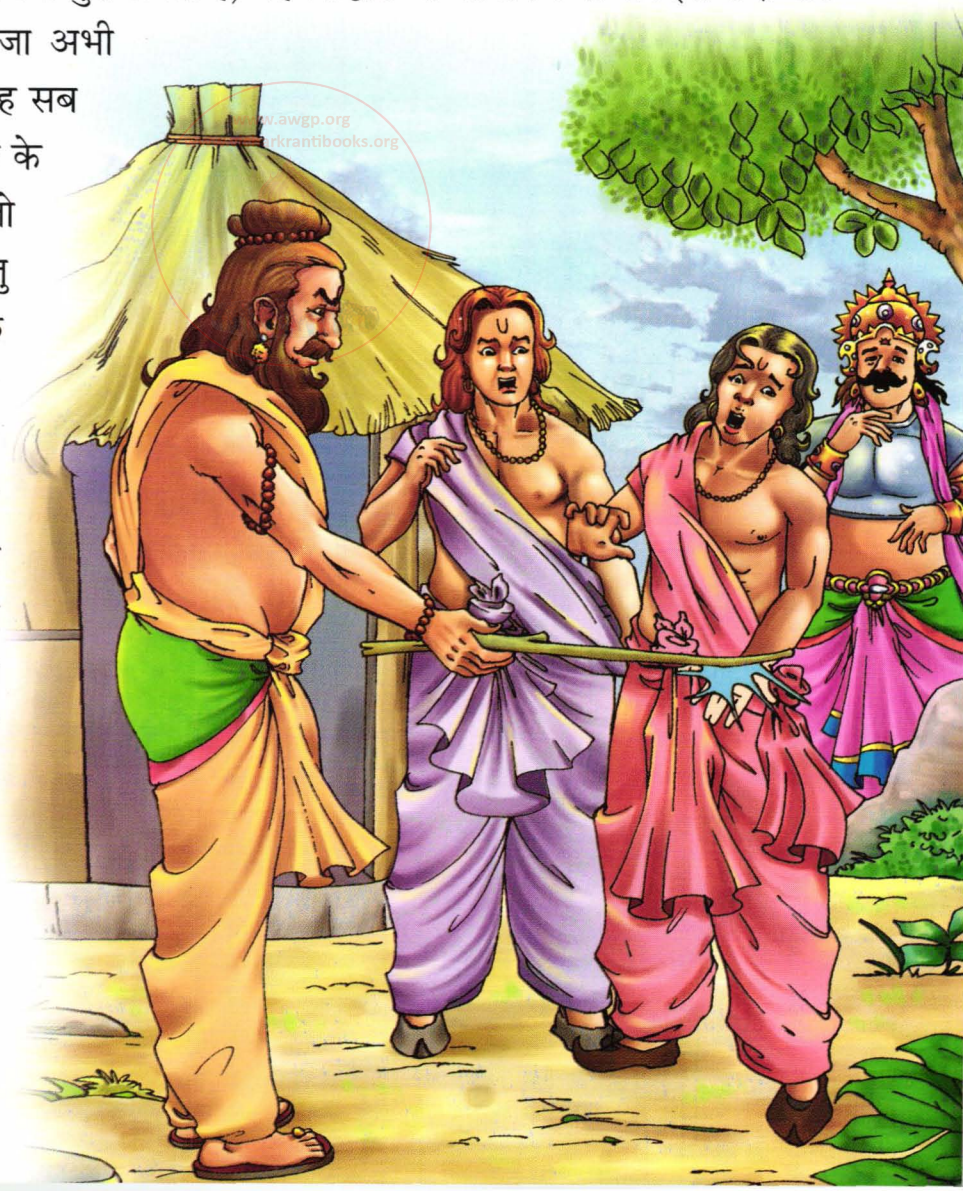

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

राजा ने भी आदेश माना

एक वर्ष गरमियों में लू बहुत चली तथा गरमी के कारण जगह-जगह घरों में आग लग जाती थी। उस गाँव में अधिकतर घर फूँस से बने हुए थे। यह बात कि रोज घरों में आग लग रही है राजा को जाकर बताई गई। लोगों की लापरवाही के कारण ऐसा होता था।

वहाँ का राजा बिंबसार बड़ा ही दयालु और नियमपूर्वक चलने वाला तथा आदर्शों की चर्चा करता था। वह पीड़ितों की सहायता भी किया करता था। जबसे आग लगनी प्रारंभ

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

हुई कोष में से बहुत सा धन खरच होने लगा। खरच बढ़ता देखकर राजा ने कहा—"नियम बना दो कि जिसके घर में आग लगेगी, उसे श्मशान में एक वर्ष रहना पड़ेगा। लोग बड़े लापरवाह हो गए हैं। उन्हें नियम में रहना सीखना होगा।" कुछ दिनों में आग लगने की घटना कम होती गई। एक बार राजा के भूसे के कोठरे में भी आग लग गई। राजा ने उसी नियम के अनुसार एक वर्ष के लिए श्मशान में अपनी कुटिया बनाई और कहा कि नियम बनाने वालों को स्वयं भी नियम का पालन करना आवश्यक होता है तभी सामान्य जन उससे प्रेरणा लेते हैं।

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

समझ की परीक्षा

एक किसान था। उसके चार बेटे थे। जब वह बुड्ढा हुआ तो सोचने लगा कि मैं किसे परिवार की जिम्मेदारी सौंपू? इनमें से कौन सा बेटा सबसे अधिक बुद्धिमान है?

उनकी बुद्धिमत्ता जाँचने के लिए बेटों को बुलाकर किसान ने एक-एक मुट्ठी धान दिए और कहा—"इनका जो मरजी हो सो करो।" एक ने उसे छोटी वस्तु समझा और धान के दाने चिड़ियों को फेंक दिए।

दूसरा उन धानों को उबालकर खा गया। तीसरे ने सँभालकर डिब्बे में रख दिया ताकि कभी पिताजी माँगेंगे तो दिखा सकूँ। चौथे ने धान को खेत में बो दिया और टोकरा भर धान पिता के सामने लाकर रख दिया। पिता ने बोने वाले को अधिक समझदार पाया और बड़ी जिम्मेदारियों के काम उसी को सुपुर्द किए। कहा—"परिवार में ऐसे ही गुण विकसित करने पड़ते हैं। ऐसी जिम्मेदारी निभा सकने वालों को ही परिवार का भार सौंपा जा सकता है। भगवान भी ऐसा ही करता है।"

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

ऊदबिलाव घाटे में रहे

एक छोटे ऊदबिलाव ने पानी में घुसकर मोटी मछली की पूँछ पकड़ ली। मछली उसे पानी में खींचने लगी। उसने जोर से चिल्लाकर दूसरे साथी को पुकारा। वह दौड़ा आया और दोनों ने मिलकर मछली को किनारे पर ला पटका।

अब बँटवारे का प्रश्न आया, तो दोनों झगड़ा करने लगे। किसको कितना भाग मिलना चाहिए, इसका फैसला न कर सके। इतने में एक सियार उधर आ पहुँचा। दोनों ने उससे न्याय करने को कहा। सियार ने वही नीति अपनाई, जो दो बिल्लियों के एक रोटी के लिए लड़ने पर बंदर ने अपनाई थी।

सियार तगड़ा था। वह बाँटने के बहाने पूरी मछली चट कर गया और ऊदबिलावों को हाथ मलते हुए जाना पड़ा। आपस में सुलह करने की अपेक्षा, जो अन्यों से फैसला कराते हैं, वे इसी प्रकार घाटे में रहते हैं। सद्भाव और सहकार के अभाव में व्यक्ति अपने हाथ आई संपदा भी खो बैठता है।

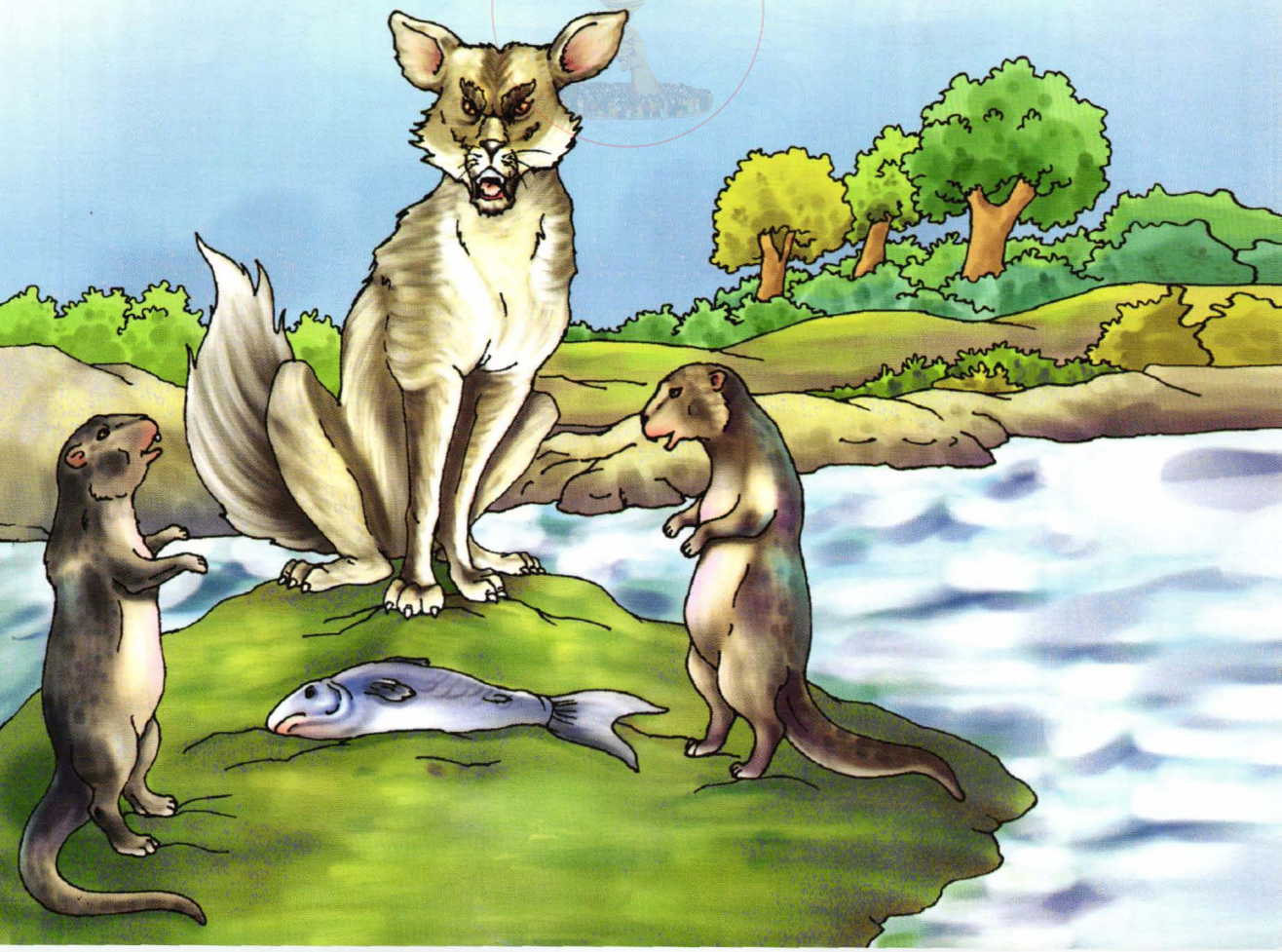

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

भगवान बीमार पड़े

एक भक्त रोज गंगा स्नान करके भगवान पर जल चढ़ाया करता था। एक दिन रास्ते में एक प्यासा मनुष्य रातभर के बुखार का मारा पड़ा था। पानी लाते देखकर उसने भक्त से पानी पीने के लिए माँगा। भक्त डपटकर बोला—"मूर्ख देखता नहीं यह जल मुझे भगवान को चढ़ाना है, तुम्हारे जैसे अनेक बीमार पड़े होंगे। उन्हें कौन पानी पिलाता घूमे?"

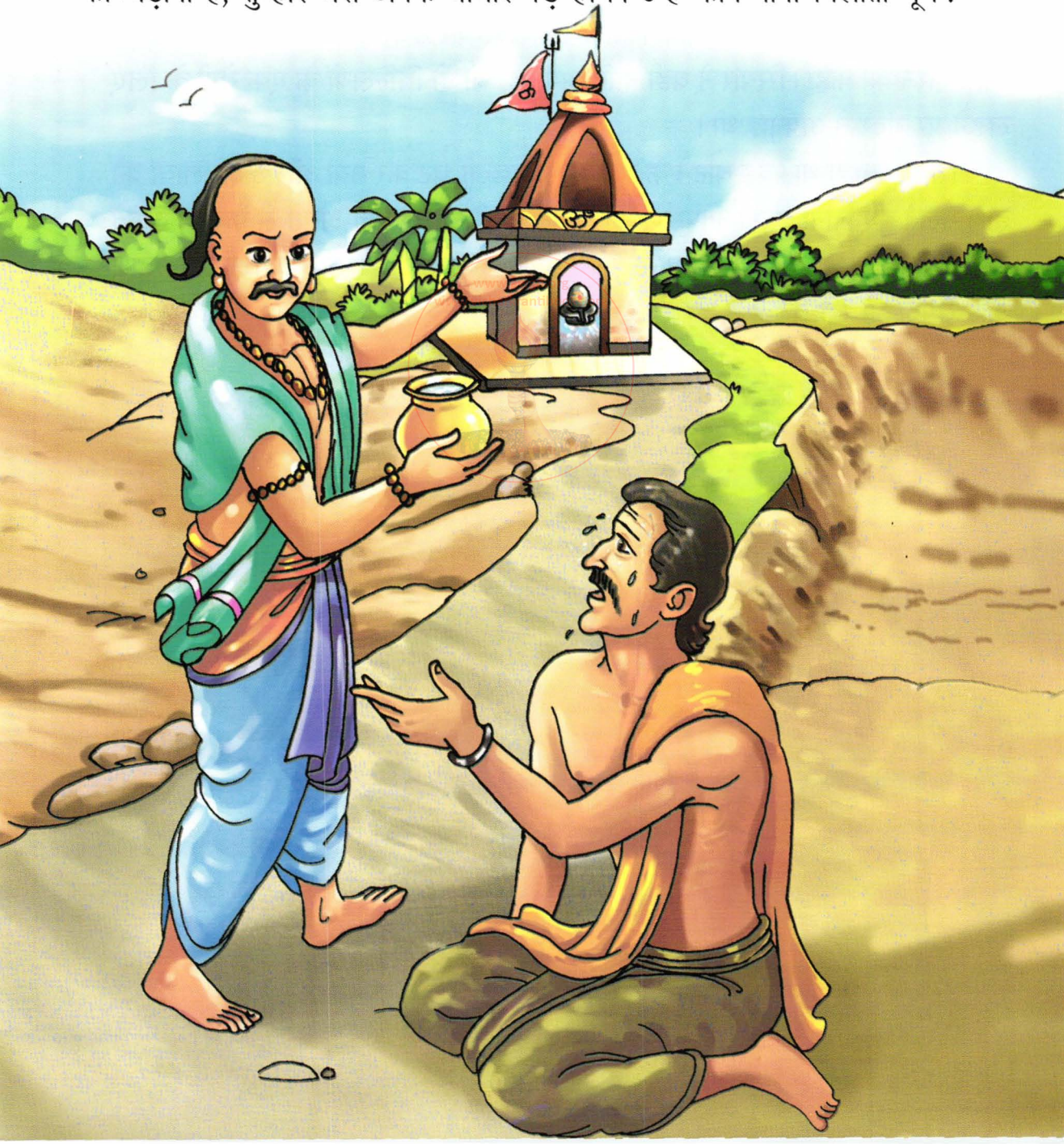

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

रात को भक्त ने सपने में देखा भगवान बीमार हो गए हैं। भक्त ने बीमारी का कारण पूछा। भगवान बोले—''तूने पीड़ित मनुष्य की सहायता नहीं की, प्यासे मनुष्य की आवश्यकता पूरी न कर मेरे स्नान में जो जल काम आया, वह मेरे लिए पाप रूप सिद्ध हुआ और उससे मैं बीमार पड़ गया।'' दूसरे दिन से वह मनुष्य सच्चे हृदय से दीन-दुखियों की सेवा करने लगा। इसी को उसने ईश्वर भक्ति का सच्चा स्वरूप समझना आरंभ कर दिया। दुखी प्राणियों की सेवा-सहायता करना पूजा से अधिक बड़ी पूजा है।

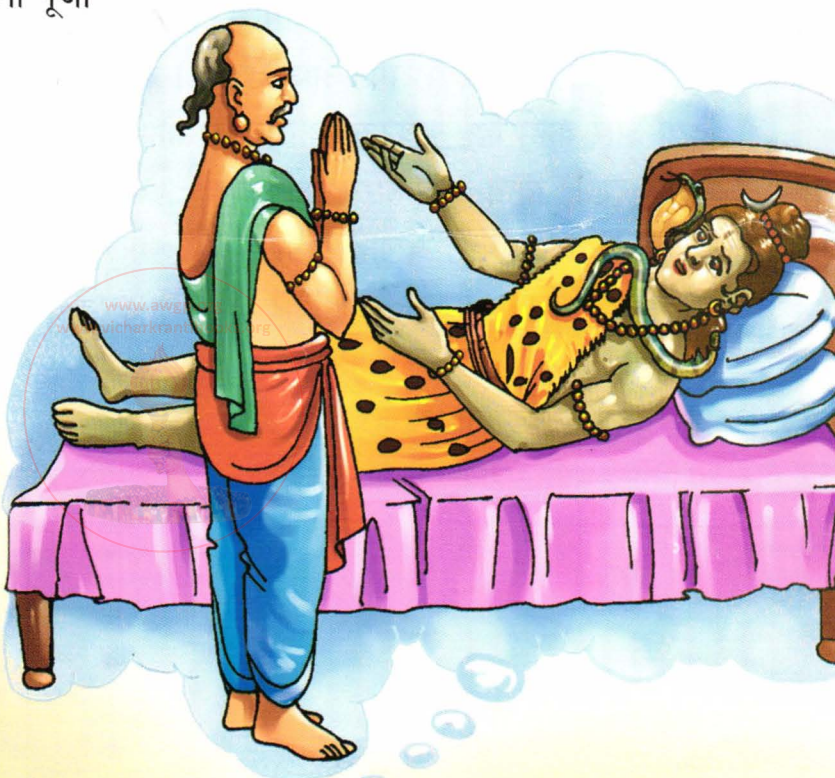

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

www.awgp.org | www.vicharkrantibooks.org

काटो मत, फुसकारो

एक सर्प नारद जी का शिष्य हो गया। नारद जी ने उससे गुरुदक्षिणा में किसी को न काटने की प्रतिज्ञा करा ली। यह बात गांव के बच्चों को भी पता चल गई। वहाँ के बच्चों ने साँप पर कंकड़ फेंके, डंडों से पीटा। उनके कंकड़ों और डंडों से पिटकर सर्प बेहाल पड़ा था।

नारद फिर आए। सर्प ने त्याग के फलस्वरूप अपनी दुर्दशा दिखाई। नारद जी ने परिस्थितियों के अनुरूप अपने आशीर्वाद को बदल दिया और कहा कि न काटने का नियम तो बनाए रखो, किंतु फुसकारने का क्रम चालू कर दो। सर्प ने सलाह मानी, रवैया बदल दिया और संकट भी दूर हो गया।

दुष्टों को डराना भी जरूरी है नहीं तो वे हानि पहुँचाए बिना नहीं रहेंगे।

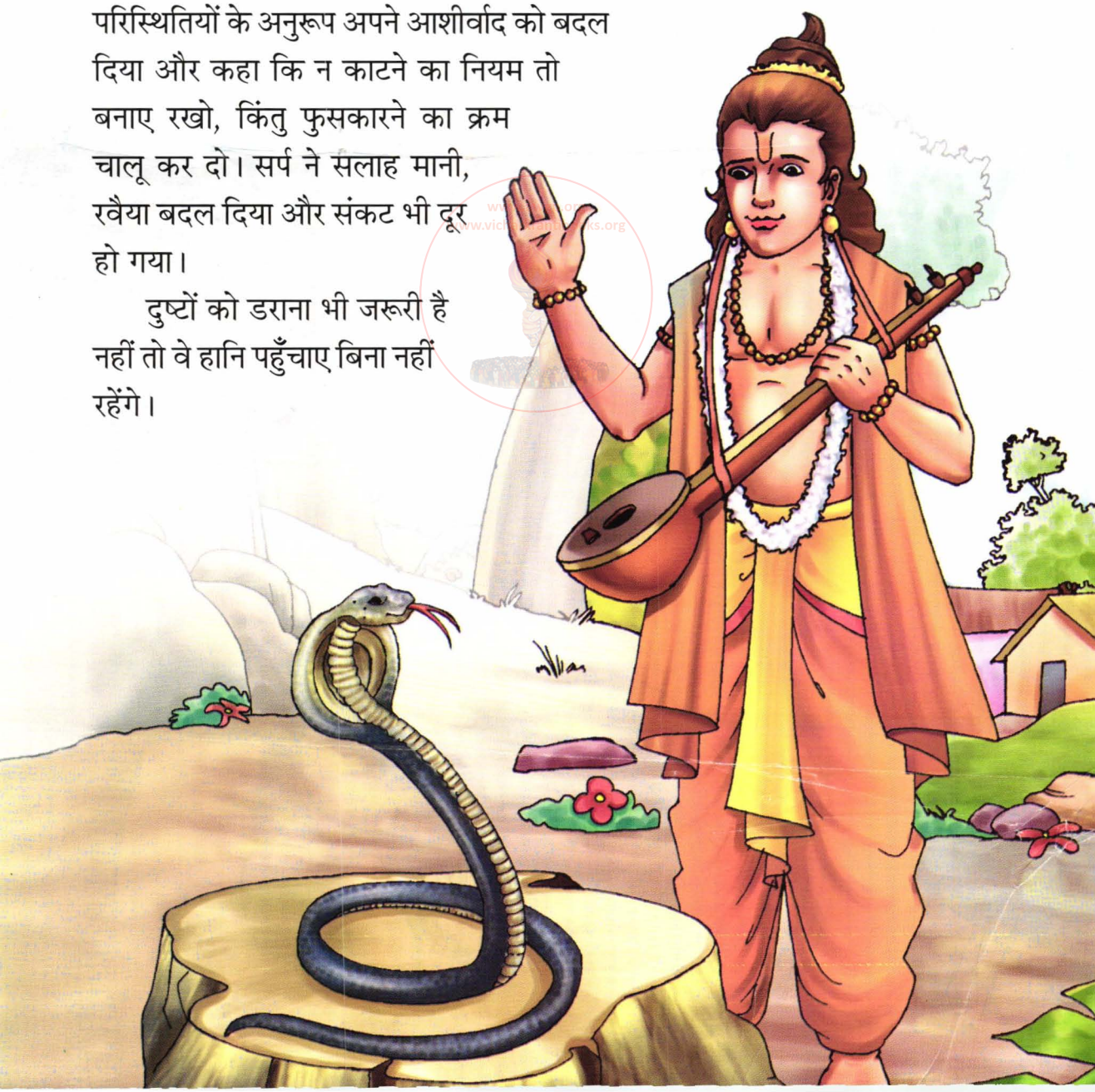

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

जी हुजूरी नहीं

एक बस से एक लड़का टकरा गया, अधिक चोट लग गई। सामने से पंडित नेहरू की कार आ रही थी। वे बच्चे को अस्पताल ले जाने की तैयारी करने लगे। भीड़ को मालूम पड़ा कि पंडित नेहरू की कार है, तो वे जय-जयकार के नारे लगाने लगे। नेहरू जी भीड़ पर झल्ला पड़े कि आप लोगों को शर्म नहीं आती। बच्चे को गाड़ी में रखवाने की बजाय जय-जयकार के नारे लगा रहे हैं।

जो दूसरों के दु:ख-तकलीफ में उनकी सहायता करते हैं,वे ही वास्तव में महान हैं।

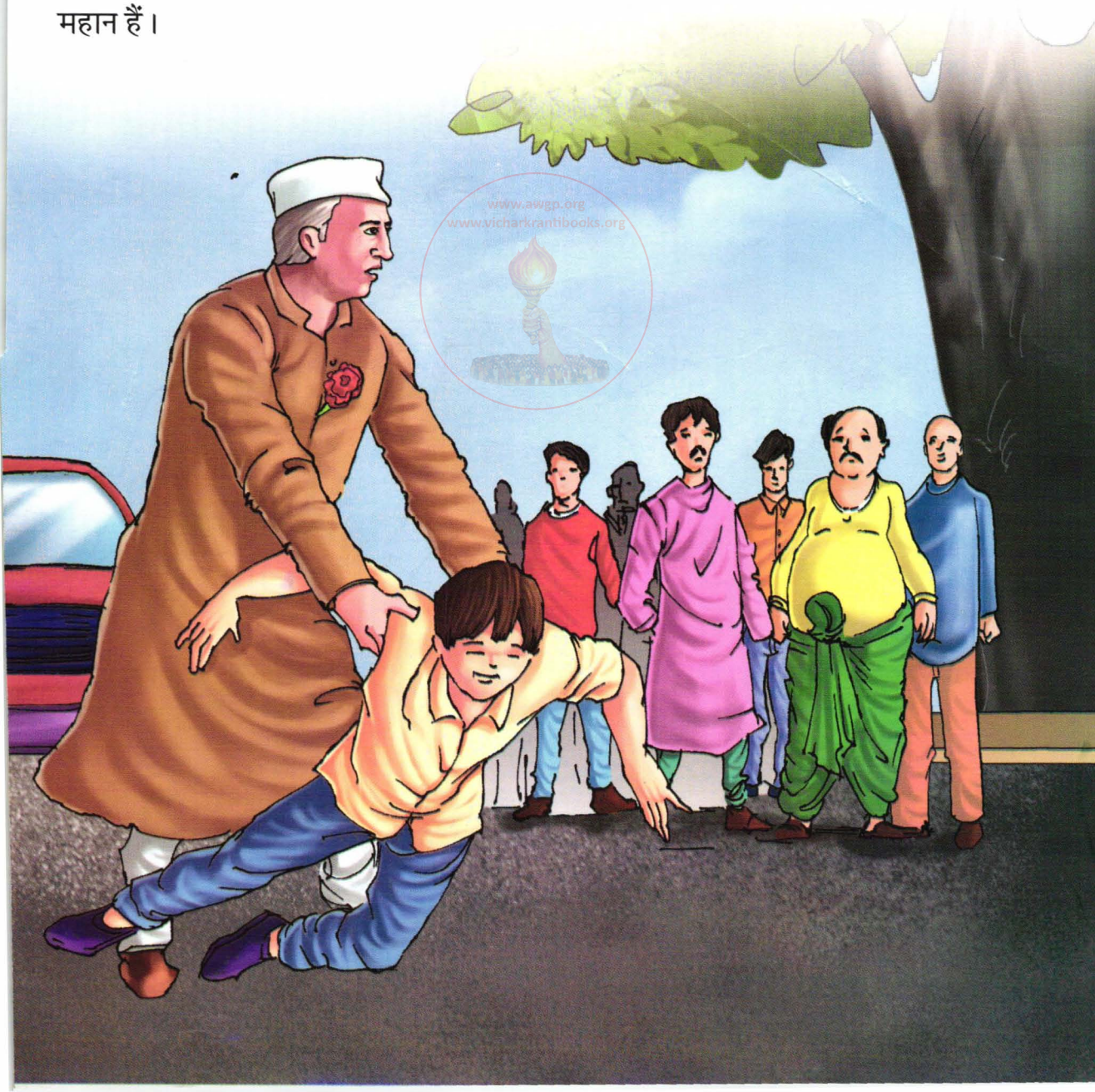

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

बकरी की नासमझी

एक जंगली बकरी के पीछे शिकारी कुत्ते दौड़े। बकरी जान बचाकर अंगूरों की झाड़ी में घुस गई। कुत्ते आगे निकल गए।

बकरी ने निश्चिततापूर्वक अंगूर की बेलें खानी शुरू कर दीं और जमीन से लेकर अपनी गरदन पहुँचे उतनी दूरी तक के सारे पत्ते खा लिए। पत्ते झाड़ी में रहे नहीं। छिपने का सहारा समाप्त हो जाने पर कुत्तों ने उसे देख लिया और मार डाला।

सहारा देने वाले को ही जो नष्ट करता है, उसकी ऐसी ही दुर्गति होती है। मनुष्य भी आज सहारा देने वाले वृक्षों, पर्वतों आदि को नुकसान पहुँचा रहा है। इसका बुरा परिणाम उसे अनेक प्राकृतिक आपदाओं के रूप में भोगना पड़ रहा है।

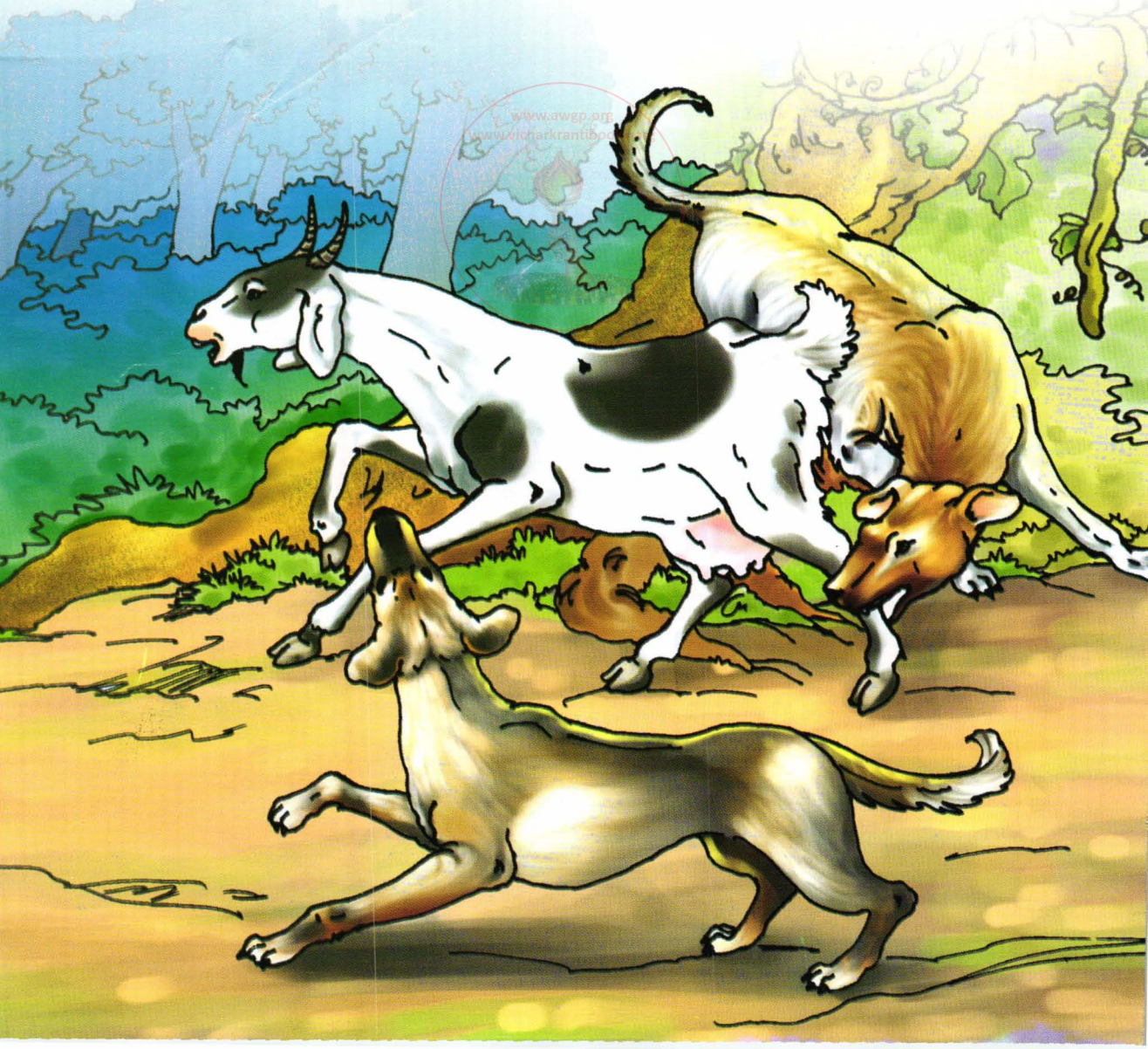

Free Read/ Download & Order 3000+ books authored by Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya (Founder of All World Gayatri Pariwar) on all aspects of life in Hindi, Gujarati, English, Marathi and other languages at
www.vicharkrantibooks.org http://literature.awgp.org

: युगऋषि पं. श्रीराम शर्मा आचार्य- संक्षिप्त परिचय :

ज्यादा जानकारी यहाँ से प्राप्त करें :
http://hindi.awgp.org/about_us

- **विचारक्रान्ति अभियान के प्रणेता :** विचारों को परिस्कृत और ऊँचा उथाने मे समर्थ 3000 से भी अधिक पुस्तकों के लेखन के माध्यम से विश्वव्यापी विचार क्रान्ति अभियान की शरुआत की ।
- **वेद, पुराण, उपनिषद के प्रसिद्ध भाष्यकार :** जिन्हों ने चारों वेद, 108 उपनिषद, षड दर्शन, 20 स्मृतियाँ एवं 18 पुराणों का युगानुकूल भाष्य किया, साथ ही 19 वाँ प्रज्ञा पुराण की रचना भी की ।
- **3000 से अधिक पुस्तकों के लेखक :** मनुष्य को देवता समान, घर-परिवार को स्वर्ग, समाज को सभ्य और समग्र विश्वराष्ट्र को श्रेष्ठ बनाने मे समर्थ हजारों पुस्तकें लिखकर समयानुकूल समर्थ मार्गदर्शन प्रदान किया ।

- **युग-निर्माण योजना के सूत्रधार :** जिन्होंने शतसूत्री युग निर्माण योजना बनाकर नये युग की आधार शिला रखी ।
- **वैज्ञानिक-अध्यात्मवाद के प्रणेता** : जिन्हों ने धर्म और विज्ञान के समन्वय की प्रथम प्रयोगशाला 'ब्रह्मवर्चस शोध संस्थान' स्थापित कर सिद्ध किया कि "धर्म और विज्ञान विरोधी नहीं, पुरक है "।
- **'२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' के उद्‌घोषक** : जिन्हों ने '२१ वीं सदी : उज्जवल भविष्य' का नारा दिया तथा युग विभीषिकाओं से भयग्रस्त मनुष्यता को नये युग के आगमन का संदेश दिया ।
- **स्वतंत्रता संग्राम के कर्मठ सैनानी** : जिन्हों ने महात्मा गाँधी, मदन मोहन मालवीय, गुरुवर रविन्द्रनाथ टैगोर के साथ राष्ट्र की स्वाधीनता के लिए संघर्ष किया एवं स्वतन्त्रता संग्राम सेनानी "श्रीराम मत्त" के रुप में प्रख्यात हुए ।
- **गायत्री के सिद्ध साधक** : जिन्हों ने गायत्री और यज्ञ को रुढियों और पाखण्ड से मुक्त कर जन-जन की उपासना का आधार तथा सद्‌बुद्धि एवं सतकर्म जागरण का माध्यम बनाया ।
- **तपस्वी** : जिन्होंने गायत्री की कठोरतम साधना कर २४-२४ लाख के २४ महापुरश्चरण २४ वर्षो में सम्पन्न किया । प्रकृति प्रकोप को शांत कर अनिष्टों को टाला, सृजन सम्भावनाओं को साकार किया ।
- **अखिल विश्व गायत्री परिवार के जनक** : जिन्हों ने अपने जीवनकाल में ही अपने साथ करोडों लोगों को आत्मियता के सूत्र में बाँधकर विश्व व्यापी 'युग निर्माण परिवार' - 'गायत्री परिवार' का गठन किया ।
- **समाज सुधारक** : जिन्हों ने नारी जागरण, व्यसन मुक्ति, आदर्श विवाह, जाति-पाँति प्रथा तथा परंपरागत रुढियों की समाप्ति हेतु अद्‌भूत प्रयास किए एवं एक आदर्श स्वरुप समाज में प्रस्तुत किया ।
- **ऋषि परम्परा के उद्धारक** : जिन्हों ने इस युग में महान ऋषियों की महान परंपराओं की पुनर्स्थापना की । लुप्तप्राय संस्कार परंपरा को पुनर्जीवित कर जन-जन को अवगत कराया ।
- **अवतारी चेतना** : जिन्होंने "धरती पर स्वर्ग के अवतरण और मनुष्य में देवत्व के जागरण" की अवतारी घोषणा को अपना जीवन लक्ष्य बनाया और चेतना का ऐसा प्रवाह चलाया कि करोंडों व्यक्ति उस ओर चल पड़े ।

गायत्री परिवार जीवन जीने कि कला के, संस्कृति के आदर्श सिद्धांतों के आधार पर परिवार,समाज,राष्ट्र युग निर्माण करने वाले व्यक्तियों का संघ है। **वसुधैवकुटुम्बकम्** की मान्यता के आदर्श का अनुकरण करते हुये हमारी प्राचीन ऋषि परम्परा का विस्तार करने वाला समूह है गायत्री परिवार। एक संत, सुधारक, लेखक, दार्शनिक, आध्यात्मिक मार्गदर्शक और दूरदर्शी युगऋषि पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी द्वारा स्थापित यह मिशन युग के परिवर्तन के लिए एक जन आंदोलन के रूप में उभरा है।

Free Download Complete Work Of Yugrishi Pt. Shriram Sharma Acharya, Founder of All World Gayatri Pariwar
Books, Magazines, Articles, Stories, Poems, Great Personalities and many more at
www.vicharkrantibooks.org | www.awgp.org